मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

हमारा फ़ैसला

"हम मुसलमानों ने पक्के इरादे के साथ सोच–समझकर भारत में रहने का फ़ैसला किया है। हमारे इस फ़ैसले को अल्लाह के इरादे के अलावा कोई और ताक़त नहीं बदल सकती। हमारा दूसरा फ़ैसला ये है कि हम इस देश में अपने पूरे अक़ीदे, दीनी माहौल और अपनी पूरी धार्मिक व सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ रहेंगे। भारत के संविधान ने हमें इस देश में न केवल रहने की स्वतन्त्रता दी है बल्कि उसने हमारे रहने का स्वागत किया है, वो हमको हमारी विशेषताओं के साथ रहने की आज्ञा देता और इसकी व्यवस्था करता है।"

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 (तकबीरे मुसलसल: पृ–145)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

APRIL 14

₹10/-

अरब शासकों के नाम

"मैं देख रहा हूं कि जज़ीरतुल अरब की तरफ़ ऐसे ख़तरनाक फ़ितने मुंह फैलाये चले आ रहे हैं जो रहम करना नहीं जानते और जिन के यहां किसी का इस्तसना नहीं। और अब तो समर अरब देश बल्कि इस्लामी देश माशाअल्लाह पूंजीवाद व कम्यूनिज़्म के अनुभव से गुज़र रहे है और फ़ौजी आक़ा व क्रान्तिकारी मार्गदर्शक और मुतलक अन्नान लीडरों के रहम व करम पर हैं।

जनता के लिये ऐश के साधनों की बहुतायत और उनकी जायज़ व नाजायज़ मांग की पूर्ति व आराम व राहत का हर सामान मुहैया करने का अनुभव। बनू उमैया व बनू अब्बास से लेकर आज तक के सभी इस्लामी देशों के लम्बे इतिहास में नाकाम रहा है और ये सियासत हमेशा नाकाम रही है। जिसमें ये समझा गया था कि लोगों की बेचैनी और नौजवानों की हौसलामन्दी को देश की समस्याओं और राजनीति हालात पर विचार करने के बजाये लज़्ज़तों और मसर्रतों और ज़िन्दगी के लुत्फ़ की तरफ़ मोड़ा जा सकता है। इस राजनीति ने कभी क़ौमों को शुक्र व एहसान मन्दी व क़दरदानी पर आमादा नहीं किया। बल्कि ऐसे लोग पहली फ़ुरसत में बग़ावत पर कमरबस्ता हो गये और उन्होंने हुकूमतों का तख़्ता उलट दिया। ये लज़्ज़त कोश और मौक़ापरस्त मादिदयत की फ़ितरत रही है। जो दीन के मतलब से भी अपरिचित और व्यवहारिक मूल्यों व आख़िरत के हिसाब की मुनकर हैं। और ये हर जगह की ऐसी कहानी और ऐसा ड्रामा है जो इतिहास के सभी दौर में दोहराया गया है। उमवियों और अब्बासियों के आख़िरी दौर में और पूर्वी और पश्चिमी शासनों के साथ यही हुआ। मिस्र व शाम में यही हुआ। इराक़ में यही हुआ और सूडान में कुछ दिनों पहले ही क्रान्ति हुई हे। इन देशों में रिआयतों और सहूलतों और ऐश व आराम और तफ़रीह व दिल्लगी के कारण की फ़रावानी ने कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाया। जनता ने हर सर फिरे का स्वागत किया।"

बहुत डरते डरते ये बात ज़बान से निकाल रहा हूं इस्लाम की मुक़द्दसियात को इन सख़्त लहरों से बचाने की फ़ुरसत बहुत कम लोगों को रह गयी है, जो ख़ौफ़नाक अन्दाज़ में इस ओर बढ़ रही हैं और इस बात का पूरा ख़तरा है कि अरब जज़ीरा भी उन क्रान्तियों का लुक्मा बन गये। जो देश को तबाह और उसे दुनिया व आख़िरत की हर नेमत से महरूम कर देते हैं। मुझे माफ़ कर दीजिये अगर मैं कहूं कि ये आख़िरी फ़ुरसत व मौक़ा है और इस ममलकत का बालिग़ नज़र हुक्मरां मोहलत की इस मुख़्तसर मुद्दत और इस ख़तरे की शिद्दत से अच्छी तरह परिचित है। असाधारण स्थितियों का सामना इस आम सियासत से नहीं हो सकता है जिसे वो हुकूमतें अपनाती रही हैं जो इन इन्क़लाबों का शिकार हुईं। अल्लाह तआला ने इन रस्मी व रिवायती तरीक़ों में कोई कामयाबी नही रखी है। इसलिये वो किसी देश में क्रान्ति की लहर को नहीं रोक सके। इस नाज़ुक वक़्त में फ़ैसलाकुन और जुर्रतमन्द कदम और बुनियादी सुधार और अल्लाह से सच्चा वादा ही काम आ सकता है।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नद्वी रह0

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:४ अप्रैल २०१४ ई० वर्ष:६

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

सूरत और हक़ीक़त..............२
बिलाल अब्दुल हयि नदवी
बेहतर ये है कि शब्दों के बजाय ज़िन्दगी बोले......३
मौलाना सैय्यद मुहम्म राबे हसनी नदवी
इस्लामी अक़ीदा.............. ५
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
भारत में सामाजिक बदलाव कारण व परिणाम.......६
मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी
औरतों की कोताहियां..............८
वज़ू के कुछ मसले..............९
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
बीवी की बदअख़लाक़ी पर सब्र..............१२
मुफ़्ती मेराजुद्दीन साहब
नौजवान लड़कों और लड़कियों की देखभाल......१४
इन्जील बरनाबास..............१५
मौलाना अब्दुर्रहीम हसनी
आलिमों की तौहीन से बचें..............१६
अवतार..............१७
मौलाना मुसव्विर आलम नदवी
अनमोल वचन..............१८
अरमुग़ान बदायूंनी नदवी
मोसाद और उसकी गतिविधियां..............१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी
अल्लाह के लिये २०
अबुल अब्बास ख़ाँ

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू0पी0.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू0

सूरत और हक़ीक़त

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सूरत और हक़ीक़त का फ़र्क़ सब जानते हैं। म्यूज़ियम में सभी प्रकार के जानवर होते हैं। लोग उनको देखते हैं। वो चलते फिरते नज़र आते हैं। उनके अन्दर रूह होती है। वहीं म्यूज़ियम का एक हिस्सा ऐसा भी होता है जहां मुर्दा जानवर होते हैं। विभिन्न जानवर होते हैं किन्तु रूह से ख़ाली। उनकी खालों में भूसा भरकर उन्हें इस तरह खड़ा कर दिया जाता है कि कई बार वास्तविक लगने लगते हैं। किन्तु वो केवल सूरत या मूरत होती है। एक बच्चा भी अगर उस शेर को धक्का दे दे तो वो ख़ुद को संभाल नहीं सकता।

मुसलमानों का अगर जायज़ा लिया जाये तो दुनिया भर में दो तरह के मुसलमान नज़र आते हैं। कुछ मुसलमान तो वो हैं जिनके अन्दर इस्लाम की हक़ीक़त नज़र आती है। वो ईमान की रोशनी से रोशन ख़ुद जिन्दगी से भरपूर और दूसरों को ज़िन्दगी का पैग़ाम देने वाले होते हैं। लेकिन ज़्यादातर संख्यां आज उन मुसलमानों की है जिनके नाम मुसलमानों के हैं लेकिन अन्दर ईमान की रोशनी ढूंढ़ना मुश्किल होता है। एक बड़े हकीम ने ये बात कही कि न जाने कितने ग़ैर मुस्लिम मुसलमानों के नाम से मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न हो रहे हैं। कोई नहीं जानता ये सिर्फ़ मुसलमानों की सूरत या मूरत है जिसके अन्दर ज़रा भी ईमान की रूह बाक़ी नहीं रही।

इस समय सारी दुनिया में मुसलमानों की फूट का सबसे बड़ा कारण यही है। दुनिया के विभिन्न देशों में मुसलमानों के हाथों मुसलमान मारे जा रहे हैं। दुनिया मारने वालों को भी मुसलमान समझ रही है और जिसको मारा जा रहा है वो भी मुसलमान समझे जा रहे हैं। लेकिन अगर सच्चाई तक पहुंचने की कोशिश की जाये तो ये नज़र आता है कि या तो मारने वाले मुसलमान नहीं हैं या मारे जाने वाले ईमान से ख़ाली हैं।

ऐसी मिसालें बहुत कम ही मिलेगी कि मारने वाले मुसलमान हों। किसी पर हाथ उठाना मुसलमानों का काम नहीं फिर भी कभी पानी सर से ऊपर चला जाता है और ज़ुल्म जब इन्तिहा को पहुंचने लगता है तो आपरेशन की ज़रूरत भी पड़ती है। लेकिन सारी दुनिया में इस वक़्त वो मुसलमान मारे जा रहे हैं जिनके दिलों में ईमान है और सिर्फ़ इसलिये मारे जा रहे हैं कि वो मुसलमान हैं। उनके दिलों में ईमान है। अल्लाह का डर है। दुनिया में वो अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से मिलाना चाहते हैं, जो पिछली क़ौमों में होता चला आया है आज वही अलग–अलग शक्लों में नज़र आ रहा है। जो नबियों और नबियों के मानने वालों की ज़बानी कुरआन ने नक़ल किया है:

"और आप हमसे सिर्फ़ इसलिये बैर रखते हैं कि हमारे रब की निशानियां जब हमारे पास पहुंची तो हमने उनको मान लिया।" (सूरह आराफ़: 126)

मिस्र व सीरिया इस समय ख़ूनी जंग के बड़े केन्द्र बने हुए हैं और दोनों जगह केवल नाम के मुसलमान– मुसलमानों का ही ख़ून इस बेदर्दी से बहा रहे हैं कि शायद कोई और होता तो सोचता लेकिन ये इस्लाम की दुश्मन ताक़तों के प्रतिनिधी बनकर सब कुछ करने के लिये तैयार हैं। यही कारण है कि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं ख़ामोश होकर तमाशा देख रही हैं। मिस्र में हज़ारों इन्सान क़त्ल कर दिये गये। लोकतन्त्र का गला जिस अन्दाज़ से वहां घोटा गया उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। इसका दसवां–बीसवां हिस्सा भी अगर कहीं और होता तो शायद दुनिया चीख़ पढ़ती, लेकिन न जाने कितने बेग़ैरत हैं जो ऐसे ज़ालिमों की मदद करने को तैयार हैं। दुनिया के क़ानून के एतबार से भी अगर ग़ौर किया जाये तो साफ़ इसकी धज्जियां बिखरती हुई नज़र आती हैं मगर इस क़ानून के मानने वालों के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती!

हर जगह दोग़ला पन नज़र आता है और सबकुछ यहूदी ज़हन रखने वाले ईसाई की प्लानिंग है और इसके लिये नाम के मुसलमानों को हथियार बनाया गया है, जिनके दिलों से ईमान निकल चुका है। ..... (शेष पेज 7 पर)

शब्दों के बजाय ज़िन्दगी बोले

मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इस्लामी कार्यों के दो बड़े क्षेत्र हैं। पहला तो उन सभी चीज़ों की तब्लीग़ जिनसे लोगों का परिचित होना आवश्यक है। दूसरी ये कि करप्शन और वादाख़िलाफ़ी की स्थिति को संभव साधनों के द्वारा न्याय व भलाई व दृढ़ता में बदलने का प्रयास। कभी–कभी ये दोनों मैदान एक प्लेटफ़ार्म पर जमा होकर आपस में एक हो जाते हैं और कभी अलग–अलग लेकिन ज़रूरत के हिसाब से हर मैदान का हक़ अदा करना ज़रूरी है। और उस कैफ़ियत के साथ जिसको पसंद करते हुए और बन्दों के हक़ की रिआयत करते हुए लोगों के लिये जायज़ बताया गया है। हालांकि हर मैदान को उसका हक़ देने और हर एक को उसके सही जगह पर इस्तेमाल करने में अक्सर लापरवाही होती है जिसकी वजह से इस्लाम के संबंध से लोगों में ग़लत तस्वीर आती है और अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह स0अ0 के बताये हुए सही तरीक़ों के अनुसार हक़ को अदा करने में कमी पैदा हो जाती है।

ये हर मुसलमान कहता है कि मुसलमान की ज़िन्दगी इस्लामी शरीअत के मुताबिक़ हो जाये। मुसलमानों की एक बड़ी संख्यां के ज़हन में ये महान उद्देश्य है लेकिन इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये जो कोशिशें जारी हैं कभी कभी वो इस कार्य की मागों को पूरा नहीं करती बल्कि सीधे रास्ते से हटी हुई नज़र आती हैं। इसलिये कि इस काम का अस्ल मक़सद लोगों के पास हक़ का पैग़ाम पहुंचाकर उनको संतुष्ट करने की भरपूर कोशिश करना और उनके नज़रियों को ठीक करना और इस्लाम के हक़ में ख़ुशगवाहर फ़िज़ा हमवार करना है।

अफ़सोस है कि हमें इस मैदान में एक बहुत बड़ी कमी नज़र आती है और जब इस मैदान में लापरवाही से काम लिया जाता है तो ऐसे हालात में सारी कोशिशें खोखला नारा हो कर रह जाती हैं।

ये हक़ीक़त है कि शोर व गुल और नारों का भी दिल व दिमाग़ पर एक असर होता है लेकिन केवल नारों के द्वारा विरोध के सैलाब को रोका नहीं जा सकता बल्कि इस्लाम की हक़ीक़त को साफ़ तौर से और जीवन की समस्याओं को हल करने में उसकी योग्यता पर पूरे विश्वास के द्वारा इस विरोध का मुक़ालबा किया जा सकता है। लेकिन विश्वास पैदा करने की योग्यता ज़हन व अक़्लों तक ले जाने वाले रास्ते और शिक्षा व प्रशिक्षण के हकीमाना तरीक़े अपनाकर ही हासिल हो सकती है। ये बहुत ही अफ़सोस नाक बात है कि मुसलमान आम तौर पर इस मैदान में पीछे रह गये बल्कि मुसलमान इन दोनों मैदानों में कोई ठोस क़दम उठाने से गाफ़िल हैं। जब तक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिये हमारी इस्लामी ग़ैरत व हमीयत और इस्लाम पर हमारे भरोसे के बावजूद – केवल ज़बरदस्त विरोध प्रदर्शनों व भावनात्मक कार्यवाहियों और असंगठित प्रयासों पर आधारित है। इस समय तक हमारी सफलता संकुचित और निम्न स्तरीय रूप में अपनों से आगे नहीं बढ़ सकती और ऐसी स्थिति में इस्लाम की लाभपरकता सिमट कर रह जायेगी और अधिकतर हालातों में अनूरूप लाभ की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। इसलिये कि अपनो का साथ तो हासिल ही है उनकी ओर से हमारे लिये कोई यलग़ार नहीं। हमले तो ग़ैरों की ओर से हैं। लिहाज़ा हमें ग़ौर इस बात पर करना होगा कि हमने उनके मुक़ाबले के लिये कितनी तैयारी की है। क्या हमने उन ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिये कोई ठोस क़दम जो इस्लाम के संबंध से उनके दिल व दिमाग़ में बैठी हुई हैं?क्या हमने अपने से क़रीब करने में उनकी नफ़सियाती उलझनों को दूर किया है?क्या हमने उनके सामने इस्लामी शिक्षाओं और इस्लामिक आचार–व्यवहार का कोई श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है?

जब हम इस मैदान में अपनी प्रयासों का निरीक्षण करते हैं तो हमारा परिणाम शून्य नज़र आता है। इस हक़ीक़त की जानकारी के लिये हमें बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि जब हम किसी भी देश में जाकर वहां की लाइब्रेरी या बुक स्टाल देखते हैं तो वहां हमें

इस्लाम से जुड़ा हुआ कोई मूल्यवान भण्डार नहीं आता है। बल्कि पूरी लाइब्रेरी ऐसे लिट्रेचरों से भरी हुई नज़र आती है जो इस्लाम को बिगाड़ने और पाठक के दिल में इस्लाम की नफ़रत बिठाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस्लाम दुश्मनों से क्या शिकायत वो तो अपनी बोलने में आज़ाद हैं लेकिन ज़रा खुद मुसलमानों के हालात का जायज़ा लीजिये क्या उनकी ओर से ऐसी किताबें वजूद में आती हैं जिनसे इस्लाम की ऐसी तस्वीर सामने आती हो कि वो एक साफ़–सुथरा तामीरी मज़हब है जो इन्सानियत को तबाही से बचाने में अपना एक अलग किरदार रखता है, ये कमी क्यों है? क्या इसका कारण ये है कि उम्मत के नेक लोग दूसरी ज़बानों की कोई जानकारी नहीं रखते? या मामूली और सतही ज़बान जानते हैं? ऐसा हरगिज़ नहीं है इसलिये कि मुसलमानों में ऐसे लोग मौजूद है जो दूसरी ज़बानों में माहिर हैं, बल्कि बहुत से लेखक दूसरी भाषाओं के लेखकों की तरह ही लिखने में माहिर भी हैं। आख़िर उन लोगों की कोशिशें किस मैदान में ख़र्च हो रही हैं। ऐसी प्रभावित भाषा व उसलूब में वो अपने लेख और खोजे क्यों नहीं प्रस्तुत करते जिससे इस्लाम से संबंधित ग़ैरों की ग़लतफहमियां दूर हों और इस्लाम के बारे में उनके सोचने का तरीक़ा बदल जाये। इस्लाम और मुसलमान के संबंध में लिखी गयीं ज़्यादातर किताबें उन लोगों की कोशिशों का नतीजा हैं जिनके ज़हनों में इस्लाम और मुसलमान के ख़िलाफ़ विरोधी प्रतिक्रिया पायी जाती है या पश्चिमी ज्ञानियों के दामे तज़दीर में फ़ंसे हुए मुस्लिम लेखकों के कार्यों का निचोड़ है जो इस्लाम और मुसलमानों की हक़ीक़त से बिल्कुल अपरिचित हैं। उन लोगों का इल्ज़ाम है कि इस्लाम ज़ोर ज़बरदस्ती और जुल्म से फैला है, जिसका अस्ल मक़सद पूंजी कमाना और क़ौमी मुहिम को बढ़ावा देना था। अगर वो मुसलमान के अख़लाक़ के बारे में बताते भी हैं तो उनको क़बाइली खुद सताई और जिन्सी ख़्वाहिशों की पूर्ति में लगा हुआ होने वाला बताते हैं। पूरी दुनिया में हमारे दुश्मनों और हरीफ़ों की नज़र में मुसलमानों के अख़लाक़ के यही माने हैं। इस्लाम दुश्मनों के साहित्यकारों व चिन्तकों ने उन्हीं पहलुओं को अपना विषय बनाया है और इन इख़्तराई पहलुओं को उन्होंने अपने स्वयं के लेखों व सामूहिक मानवीय ज्ञान की किताबों में दर्ज किया है। यही किताबें यूनिवर्सिटी, कालिज और स्कूलों को पाठ्यक्रम हैं। यही किताबें उनके खोजियों का क्रेन्द्र हैं। एक रिसर्च स्कालर और अधिकतर जगहों पर मुसलमानों का भरोसा भी उन्हीं लेखों पर है और हम अर्से दराज़ तक उन सभी चीज़ों से ग़ाफ़िल रहे यहां तक कि पानी सर से ऊंचा हो गया और मौक़ा हाथ से जाता रहा और जब हम जागे तो अपने दुश्मनों को ताना देने में लग गये हमारे इस काम से दुश्मन के गुस्से की आग और भड़क उठी, उसकी नफ़रत बढ़ गयी और इनकी कार्यवाहियों को देखकर दुश्मनों ने इस्लाम की ताक़त को तोड़ देने का पुख़्ता इरादा कर लिया।

इस्लाम के आरम्भिक युग में अरब के मुसलमान हिदायत की रोशनी माने जाते थे। किसी भी काम से वो कहीं भी जाते तो वहां के लोगों के आचरण पर उनके आचरण का गहरा असर पड़ता। उनको देखकर लोगों के ज़हन बदल जाते। देश को जीतने से पहले वहां के लोगों के दिलों को जीतना उनकी श्रेष्ठता थी। जिसको भी उनसे मुलाक़ात या उनके साथ रहने का मौक़ा मिल जाता वो उनका आशिक़ हो जाता। जब वो पूरब में पहुंचे तो वहां के लोगों ने उनके किरदार के सामने सर झुका दिये और देश जीतने के लिये उनको किसी प्रकार के असलहे की आवश्यकता नहीं पड़ी। मलेशिया, इन्डोनेशिया, चीन के इलाक़े और हिन्दुस्तान के समुद्री क्षेत्रों के इतिहास में कहीं इस बात का ज़िक्र नहीं मिलता कि मुसलमानों ने उनके साथ जिहाद किया या तलवार के हमले से उनको इस्लाम में दाख़िल किया हो। बल्कि उनके किरदार की पुख़्तगी और मीठी ज़बान ने यहां के लोगों के दिल मोह लिये और वो खुद इस्लाम की गोद में दाख़िल हो गये।

आज मुसलमानों की ज़िन्दगी की जो तस्वीर ग़ैरों के सामने आ रही है उससे तो मुसलमान और इस्लाम से नफ़रत और बढ़ रही है। इस्लाम के संबंध से उनकी दिमाग़ी उलझने बढ़ रही हैं। ग़ैर मुस्लिम देशों में इस्लाम का सही नज़रिया रखने वाले इल्म व अदब के ऐसे माहिरीन हैं जो अपनी विशेषताओं से उनके दिमागों का रुख़ बदल सकें लेकिन रुझानों और नज़रियों के सुधार के लिये शिक्षा व प्रचार के नये तरीक़े अपनायें। खोज पर आधारित विषय तैयार करें और ऐसे साहित्यकार को जन्म दें जिससे इस्लाम और मुसलमानों के संबंध में एक सही और संजीदा सोच क़ायम हो सके। इस काम के लिये हमें उन्हीं की ज़बान का इस्तेमाल करना होगा जिनको हम सम्बोधित करेगें। ..... (शेष पेज 11 पर)

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सजदा: इबादत के कामों में सजदे का सबसे अधिक महत्व है। ये केवल अल्लाह के साथ ख़ास है। किसी और को सजदा करना शिर्क है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"न सूरज को सजदा करो और न चांद को और सजदा अल्लाह को करो जिसने पैदा किया, अगर तुम उसी की बन्दगी करते हो।" (फ़सलतः 37)

एक हदीस में आता है कि:

"मैं हीरा गया वहां मैंने लोगों को देखा कि वो अपने चौधरी को सजदा करते हैं, तो मैं रसूलुल्लाह स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने कहा, मैं हीरा गया वहां देखा कि वो लोग अपने चौधरी को सजदा करते हैं तो आप इस बात के ज़्यादा हक़दार हैं कि आपको सजदा किया जाये तो आप स0अ0 ने मुझसे फ़रमायाः तुम्हारा क्या ख़्याय है कि अगर तुम मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे तो क्या उसको सजदा करोगे? नहीं। तो आप स0अ0 ने फ़रमाया, तो ऐसा न करो।" (अबूदाऊद)

बहुत से लोगों के दिमाग़ में ये बात आती है कि अगर अल्लाह के अलावा किसी को सजदा करना शिर्क होता है तो अल्लाह तआला हज़रत आदम अलै0 को फ़रिश्तों से सजदा न कराते। इसी तरह हज़रत याकूब अलै0 और उनके बेटे हज़रत यूसुफ़ अलै0 के आगे सजदे में न गिर जाते। ये एक शैतान ख़्याल है। पिछले अम्बिया की शरीअतें अलग थीं। ये उम्मत सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद स0अ0 की शरीअत की पाबन्द है। हज़रत आदम अलै0 की शरीअत में भाई–बहन की शादी जायज़ थी। हज़रत याकूब और हज़रत यूसुफ़ अलै0 की शरीअत के बहुत से हुक्म अलग थे। उनके यहां सम्मान हेतु सजदा करने की छूट थी लेकिन इस शरीअत में अल्लाह के अलावा किसी के लिये सजदे की इजाज़त नहीं। जैसा कि ऊपर गुज़र चुकी आयत व हदीस गुज़र चुकी है। जो चीज़ें मुहम्मद स0अ0 की शरीअत में मना और हराम हैं दूसरी पिछली शरीअतों से दलील लेकर उन पर अमल करना खुली गुमराही है और हमारे नबी स0अ0 की हक़तलफ़ी है।

आप स0अ0 ने वफ़ात से दो–तीन दिन पहले ये बात फ़रमायी थी कि: "अल्लाह यहूद व नसारा पर लानत करे उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदा गाह बना लिया है।"

ज़ाहिर है कि जब आप स0अ0 की क़ब्रे अतहर के सामने सजदा नाजायज़ है तो किसी और वली की क़ब्र पर सजदा करना कहां जायज़ हो सकता है। ये मुश्रिकाना काम जो लानत का मुस्तहिक़ है। आज उम्मत का एक गिरोह इसमें लगा हुआ है और वो अल्लाह और अल्लाह के रसूल स0अ0 की खुली नाफ़रमानी कर रहा है।

जिस तरह क़ब्र को सजदा करना शिर्क का काम है उसी तरह किसी ज़िन्दा आदमी या दूसरी चीज़ को सजदा करना शिर्क का काम है। ये रस्म भी बहुत से इलाक़ों में पैदा हो गयी है कि बहुत से लोग अपने पीर को सजदा करते हैं। इससे सजदा करने वाले का भी ईमान जाता है और सजदा कराने वाले का भी। इसलिये कि ये काम इबादत है और इबादत का काम अल्लाह के अलावा किसी और के लिये किया जाये तो ये शिर्क है, जिसको मिटाने के लिये आप स0अ0 दुनिया में तशरीफ़ लाये। अगर कोई ये सोचता है कि सजदा इबादत के लिये नहीं बल्कि सम्मान के लिये तो इसका जवाब ये है कि आप स0अ0 से बढ़कर कौन सम्मानित हो सकता है मगर खुद आप स0अ0 ने सख़्ती से इससे मना फ़रमाया जैसा कि ऊपर हदीस में गुज़र चुका है। जिसमें सजदे का ज़िक्र था वो सजदा सम्मान हेतु ही था लेकिन उम्मत को रोक दिया गया इसलिये पूरी उम्मत इस पर सहमत है कि अल्लाह के अलावा किसी को भी किसी किसी भी तरह का सजदा जायज़ नहीं और ये शिर्क है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और ये सजदे सब अल्लाह ही के लिये हैं तो अल्लाह के सिवा किसी और को मत पुकारो।" (सूरह जिनः 18)

सजदे के अलावा किसी के सामने नमाज़ की तरह हाथ बांधकर खड़े होना भी ठीक नहीं, एक हदीस में आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमाया:

"जिसको ये अच्छा लगता हो कि लोग उसके सामने तस्वीर की तरह खड़े रहें, वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"

आप स0अ0 को तो ये भी पसन्द नहीं था कि आप मजलिस में किसी ऊंचे स्थान पर बैठे, आप स0अ0 का नियम था कि आप स0अ0 बैठ जाते और सहाबा किराम रज़ि0 उनके चारों ओर बैठ जाते।

भारत में सामाजिक बदलाव
कारण व परिणाम

मौलाना असरारुल हक़

हमारे देश में कई स्तर पर तेज़ी के साथ बदलाव हो रहे हैं। इनमें विशेष रूप से सामाजिक स्तर पर बदलाव की गति ज़्यादा तेज़ नज़र आ रही है। शहरी क्षेत्र हो या देहाती क्षेत्र सभी जगह बदलाव के प्रभाव प्रकट हो रहे हैं। जो चीज़ें पहले शहरी समाज में होती हैं अब वो कुछ ही समय के बाद क़स्बों और गावों में भी दिखाई देती हैं। जैसे पहनावे की जो नयी शक्लें शहरों में सामने आती हैं वो कुछ ही महीनों के बाद क़स्बों और गावों में भी ख़ूब दिखाई देती हैं। इसी तरह सामाजिक स्तर पर जिस प्रकार की घटनायें शहरी क्षेत्रों में घटित होती हैं वो कुछ ही समय के बाद देहाती क्षेत्रों में भी होने लगती हैं। टीवी चैनलों पर प्रकाशित होने वाले समाज से जुड़े हुए जिन प्रोग्रामों को शहरों में प्रसिद्धी प्राप्त है उन्हें गावों में भी ख़ूब शोहरत मिल रही है। इसी तरह जिस प्रकार की सामाजिक बुराइयां आज हमें शहरों और एडवांस समझी जाने वाली जगहों पर नज़र आ रही है, अब उनकी झलकियां आम जगहों पर भी दिखाई दे रही है। अजनबी लड़के और लड़कियों के बीच दोस्ती और फिर उनके बीच शादी की घटनांए लगभग देश के हर राज्य में घटित हो रही हैं। जिस प्रकार बलात्कार की घटनांए एडवांस इलाक़ों में आये दिन होती हैं। उसी प्रकार पिछड़े क्षेत्रों में भी इस प्रकार की घटनांए दिन–प्रतिदिन घटित हो रही हैं। शादियां भारत के हर वर्ग में एक समस्या बन गयी है। जहेज़ की मार से देश के सभी वर्ग परेशान हैं। जुर्म की वारदातें हर जगह अन्जाम दी जा रही हैं। मानो की पूरे भारत में सामाजिक स्तर पर बदलाव की एक लहर आयी हुई है।

ऐसी स्थिति में कई सवाल पैदा होते हैं। जैसे सामाजिक स्तर पर जो बदलाव हो रहे हैं क्या वो वाक़ई भारत की जनता के लिये बेहतर हैं?क्या भारत के बदलते सामाजिक मूल्य आने वाली नस्लों के लिये लाभदायक होगें?क्या प्राचीन भारतीय समाज बेकार हो चुका है? क्या मानव मूल्य बदल चुके हैं?क्या समाज में होने वाले बदलाव से भारतीय लोगों का जीवन उलझ नहीं जायेगा?क्या सामाजिक बदलाव देश की जनता को समस्याओं से छुटकारा दिलाने वाला है या उन्हें और समस्याओं के भंवर में फसाने वाला है? ये सारे सवाल विचारयोग्य हैं। इन्हें नज़रअन्दाज़ करना मुल्क व क़ौम के लिये किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है।

वास्तविकता ये है कि सामाजिक स्तर पर जो बदलाव देखने को मिल रहे हैं वो लाभकारी कम और हानिकारक ज़्यादा साबित हो रहे हैं। जैसे हमारे समाज में एक नयी बात ये सामने आ रही है कि औरतों को ज़्यादा से ज़्यादा आज़ाद बनाने का रिवाज आम होता जा रहा है। बाज़ारों, पार्कों, क्लबों, दफ़्तरों, तफ़रीहगाहों, फ़िल्मों, नाटकों और असभ्य प्रोग्रामों में उनका बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेना अब बिल्कुल आम हो गया है। अगर क्लबों, तफ़रीहगाहों, फ़िल्मों और प्रोग्रामों में औरतें नहीं होती हैं तो उन्हें बेकार समझा जाता है। अजीब मामला तो ये है कि ग़ैर मर्दों व ग़ैर औरतों के बीच मेलजोल इतना बढ़ गया है कि अब इसे कोई बुराई की बात नहीं समझा जाता। दफ़्तरों में औरतें ग़ैर मर्दों से बेकार की बातें करते हुए नज़र आती हैं। पार्कों में औरतें ग़ैर मर्दों की बाहों में बाहें डालकर घूमती हुई नज़र आती हैं। बाज़ारों में बेपर्दा चीज़ों का लेन–देन भी आम बात बन गया है। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि बहुत सी औरतें फ़ैशन में लिपटी हुई होती हैं और बहुत चुस्त व तंग कपड़े पहनने से भी परहेज़ नहीं। इस स्थिति को किसी भी लिहाज़ से भारतीय समाज के लिये ठीक नहीं कहा जा सकता है। ये अलग बात है कि बहुत से लोग इसे रोशन ख़्याली कहते हैं और बहुत सी समस्यांए पैदा हो रही हैं और औरतें असुरक्षित होती जा रही हैं।

किसी भी दिन का कोई भी अख़बार उठा कर देख लीजिये उसमें रेप और शारीरिक शोषण की बहुत सी घटनांए पढ़ने को मिल जायेंगी। जबकि कुछ प्रतिशत घटनांए ही मीडिया में आती हैं। वरना प्रतिदिन कितनी घटनांए ऐसी होती हैं जो सामने नहीं आतीं और उन्हें छिपाये रखने की कोशिश की जाती है। हर घटना थाने तक भी नहीं पहुंचती। इससे अन्दाज़ा होता है कि औरतों के वर्तमान रहन–सहन ने उन्हें कितना असुरक्षित बना दिया है?कुछ दशकों पहले भारत में ऐसे हालात न थे, आज के मुक़ाबले में न के बराबर रेप या ज़िना की घटनांए सामने आती थीं क्योंकि उस समय औरतें एहतियात के साथ घरों से बाहर निकलती थीं। न वो इतना फ़ैशन करती थीं न वो फ़ैशन को दिखाती फिरती थीं। न ग़ैर मर्दों से बेजा बातें करती थीं और न उनके साथ ठहलती व घूमती

फिरती थीं। मानो कि एहतियात ने उन्हें सुरक्षित बनाया था मगर अब औरतें अपनी सुरक्षा के लिये इस पहलू पर कम विचार करती हैं। एक साल पहले भारत की राजधानी दिल्ली में तेइस साल की लड़की से गैंगरेप की जो घटना सामने आयी उसके बाद औरतों की सुरक्षा के संबंध से बहुत से प्रदर्शन किये गये। आये दिन होने वाली बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिये विभिन्न प्रकार के उपाय प्रस्तुत किये जाने लगे परन्तु इस पहलू पर कम ध्यान दिया गया कि औरतों को स्वयं ज़्यादा एहतियात करना चाहिये। समय की मांग है कि औरतें बेज़रूरत ज़्यादा घरों से बाहर न निकलें। ऐसे लिबास न पहनें जो जिन्सी ख़्वाहिशों को उभारने वाला हो। ग़ैर मर्दों के साथ संबंध न बढ़ाएं। बेपर्दगी से परहेज़ करें। यदि देश की सभी औरतें अपने रहन–सहन में इन चीज़ों को ले आये तो इस बात का यक़ीन है कि शोषण की घटनाएं बहुत कम हो जायेंगी। इसके अतिरिक्त क़ानून को सख़्त और क्रियान्वित बनाना और पुलिस को एक्टिव करना भी बहुत आवश्यक है। अगर पुलिस मुस्तैद हो और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे तो बहुत सी औरतों की इज़्ज़तों को बचाया जा सकता है। सख़्त क़ानून और उस पर अमल भी यक़ीनन ऐसे तत्वों पर लगाम लगा सकता है जो हर प्रकार के डर से लापरवाह होकर दूसरों की ज़िन्दगियों से खिलवाड़ करते हैं।

भारतीय समाज में पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव भी बढ़ते जा रहे हैं। दर्द ये है कि अब पश्चिमी सभ्यता की हर चीज़ को अपनाने की मानो हमारे समाज में होड़ दिखाई दे रही है। यहां तक कि वो चीज़े जो मानवता के लिये बहुत हानिकारक हैं, उन्हें भी अपना रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता के बहुत से पहलू मानव मूल्यों के विपरीत हैं किन्तु अब हमारे समाज के बहुत से लोग उनसे भी परहेज़ नहीं रहे हैं। परिणाम ये हो रहा है कि समाज में जुर्म का ग्राफ़ बढ़ रहा है। मुजरिमों की भीड़ से जेलें भरी पड़ी हैं। अल्लाह की मख़लूक़ की बहुत बड़ी संख्यां मुजरिमों के ज़ुल्मों को बर्दाश्त कर रही है। सामाजिक स्तर पर होने वाले बदलावों के परिणामों में अगर जुर्म करने वाले लोगों की संख्यां बढ़ती है तो क्या ये देश और जनता के लिये ठीक है?क्या हमें ऐसा ही समाज चाहिये।

हैरान करने वाली बात ये है कि सामाजिक स्तर पर ऐसे बदलाव जो वर्तमान नस्ल को तबाही की ओर ले जा रहे हैं उन्हें रोकने के लिये कोशिशें नहीं की जा रही हैं। टी. वी. चैनलों पर बहुत से ऐसे प्रोग्रामों का प्रसारण किया जाता है, जो नौजवान नस्ल पर अच्छा प्रभाव नहीं डालते, जो उनकी इच्छाओं को उभारते हैं, जो उनमें ईर्ष्या व स्वार्थ के विषाणु उत्पन्न करते हैं, जो उन्हें जुर्म की दुनिया में ढ़केलते हैं जो उन्हें अत्याचार और व्याभिचार की ओर आकर्षित करते हैं। लेकिन उन पर पाबन्दियां नहीं लगायी जाती। नशा बढ़ता जा रहा है और उसके परिणाम में बीमारियां व मौतें बढ़ रही हैं। क्या हमें ऐसा समाज चाहिये जिसमें लोग शराब पीकर रास्ते में नालों में औंधे मुंह पड़े हों। क्या हमारे देश के लिये ऐसा बदलाव निंदनीय नहीं है जिसके कारण बहुत से लोग नशे में धुत होकर औरतों को छेड़ें, घरों में जाकर अपनी बीवी और बच्चों को पीटें? क्या ऐसा बदलाव हमारे देश के लिये नुक़सानदेह नहीं है जिसमें एड्स ज़मीन को अपनी चपेट में ले ले?हमें अपने देश को व अपने समाज को ऐसे बदलाव से बचाना चाहिये जो देश में अशांति फैलाने वाले हों और लोगों के सुकून को छीनने वाले हों।

शेष : सूरत व हक़ीक़त

"क्रूफ़र" (Krofer) ने लगभग एक सदी पहले ये बात अपने प्रचारकों से कही थी कि मुसलमानों को मसीही बनाने की आवश्यकता नहीं, हाँ! ये काम करना है कि उनके दिलों से इस्लाम खुरच खुरच कर निकाल दिया जाये, वो केवल नाम के मुसलमान रह जायें, फिर वो हमारे काम के हैं।

मुसलमानों के ख़िलाफ़ ये प्लानिंग जो की गयी थी उसके नतीजे आज हमारे सामने हैं। इसका हल केवल ये नहीं कि ग़म व ग़ुस्से का इज़हार कर दिया जाये, बल्कि इसका अस्ल हल ये है कि एक ओर नयी नस्ल के मार्गदर्शन की चिन्ता विशेष रूप से जो वर्ग पढ़ा–लिखा समझा जाता है और नेतृत्व उसी के हाथ में आता है उस वर्ग पर मेहनत की जाये। उनके ज़हनों को मोड़ा जाये और दूसरी ओर दुआंए की जायें ये अल्लाह की रहमत को खींचने का बहुत बड़ा ज़रिया है और सख़्त हालात में ईमान वालों का बहुत बड़ा हथियार है। मगर ज़ाहिरी दुआ के साथ दवा की भी ज़रूरत है।

इसके लिये एक लम्बे अर्से तक लगातार मेहनत करनी पड़ेगी। जब स्थितियां वास्तव में बदलेगी तो हालात कुछ और होंगे। उत्थान और पतन के इतिहास में न किसी के लिये हमेशा उत्थान है और न हमेशा पतन।

"और ये (आते जाते) दिन हम लोगों में अदल बदल करते रहते हैं।"

औरतों की कोताहियां

औरतों की कुछ कोताहियां जिनको छोड़ना ज़रूरी है

1. कुछ दिनों और महीनों को मनहूस समझना जैसे सफ़र, ज़ीक़ादा, मुहर्रम को मनहूस समझना और उनमें शादी इत्यादि न करना।

2. जहां उल्लू बोले उस जगह को वीरान हो जाती है या मुंडेर पर कौव्वा बोले तो मेहमान आता है ग़लत है।

इसी तरह किसी की ज़बान की रंगत काली हो तो उसे मनहूस समझना ग़लत है।

3. मुर्दे की चारपाई और कपड़ों को घर पर रखना मनहूस है, ये भी ग़लत है।

4. किसी काम के बीच में छींक आये तो ये समझना कि अब काम न होगा, इसी तरह रात को झाड़ू लगाना या मुंह से चिराग़ बुझा देना नहूसत लाता है, ग़लत है।

5. हथेली में खुजली हो तो रक़म मिलती है, दायीं आंख फड़के तो कोई याद करता है ग़लत है।

6. झाड़ू से मार देने से जिस्म सूख जाता है, बिल्ली रोये तो कोई मरता है या जानमाज़ का कोना न उलटा तो शैतान उस पर नमाज़ पढ़ता है ग़लत है।

7. औलाद के लिये जादू कराना, दूसरे निकाह को मायूब समझना, बेवा को मनहूस समझना ग़लत है।

8. कुछ औरतें नमाज़ को इतना लेट करती हैं कि मकरूह वक़्त शुरू हो जाता है और इसी तरह रुकू के बाद क़ौमा और क़ौमा और सजदा के बाद जलसा पूरा नहीं करतीं और कई कई वक़्त की नमाज़ क़ज़ा करती हैं।

9. माहवारी के बाद नहाने में जल्दी नहीं करतीं। निफ़ास बन्द होने के बाद पूरे चालिस दिन नमाज़ नहीं पढ़तीं हालांकि जब ख़ून बन्द हो जाये तो ग़ुस्ल करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म है। क़ुरआन सही तलफ़्फ़ुज़ से पढ़ने का एहतिमाम नहीं करतीं। कभी–कभी इससे नमाज़ फ़ासिद हो जाती है।

10. ज़ेवर की ज़कात हिसाब करके अदा नहीं करतीं हालांकि ऐसा ज़ेवर आग का अंगारा है।

11. सतहत्तर किलोमीटर से ज़्यादा सफ़र बग़ैर शरई महरम के जायज़ नहीं मगर करती हैं। इसी तरह हज व उमरा बग़ैर शरई महरम के कर लेती हैं।

12. छोटी सी वजह से रोज़ा छोड़ देती हैं, हालांकि माहवारी का सिर्फ़ दर्द शुरू होने से रोज़ा छोड़ना जायज़ नहीं।

13. क़ुर्बानी वाजिब होती है चाहे ज़ेवर की वजह से या नक़द ज़ाती रक़म की वजह से मगर अदा करने का एहतिमाम नहीं करतीं।

14. क़रीबी रिश्तेदार जिनसे पर्दा फ़र्ज़ है नहीं करती और बहुत सी दीनदार औरतें भी इसमें ग़फ़लत करती हैं।

15. अपने शौहर की तन्हाई की बातें मां, बहनों, सहेलियों को बताती हैं जो बहुत बेहयाई है।

16. ज़ेवर और कपड़ों के ज़रिये दूसरी औरतों पर फ़ख़्र करती हैं या हक़ीर समझती हैं हराम है। जो हराम है। जो दिखाने की ग़रज़ से कपड़ा पहनेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसे ज़िल्लत का लिबास पहनायेगा।

17. ग़ीबत, लान–तान और पति की नाशुक्री बहुत करती हैं। जो जहन्नम में जाने का बहुत बड़ा ज़रिया है।

18. सम्भोग के बाद नहाने में अक्सर देर करती हैं जिससे रहमत के फ़रिश्ते घर में दाख़िल नहीं होते।

19. बारीक और जिस्म पर फ़िट लिबास पहनती हैं। ऐसी औरत जन्नत की ख़ुशबू भी न सूंघेगी और इसी तरह सर के बाल ग़ैर महरमों के सामने खोलती हैं जो हराम है।

20. औरतों में अल्लाह के ज़िक्र का एहतमाम बहुत कम है हालांकि ये एक ऐसी इबादत है जिसके लिये वज़ू और पाक होना भी ज़रूरी नहीं है और इसके लिये घर के काम–काज छोड़ना भी ज़रूरी नहीं है। हाथ काम में लगे रहे और ज़बान अल्लाह के ज़िक्र में।

21. औरतें पति के सामने तो मामूली कपड़ों में रहती हैं और बिरादरी में ख़ूब बन संवर कर जाती है। हालांकि पति के लिये बनाव सिंगार पर उसे अज्र मिलता है।

22. पति को दीनदार बनाने का एहतिमाम नहीं करतीं हालांकि और बहुत सी बातें उससे मनवा लेती हैं।

23. पति के सामने ज़बान चलाती हैं जो बहुत बड़ा गुनाह है।

वज़ू के
कुछ मसले

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हदीस शरीफ़ में साफ़ आया है कि जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी पाकी है। इस हदीस से साफ़ तौर पर से ये बात मालूम हुई कि नमाज़ पाकी के बग़ैर ठीक नहीं होगी। पाकी का मतलब ये है कि नमाज़ पढ़ने वाला हर तरह की हुक्मी और हक़ीक़ी नजासतों (जिनका हुक्म आया है या जो अस्ल नजासतें हैं) से पाक हो। उसका बदन, कपड़े और जगह ज़ाहिरी गन्दगी से पाक हो उसने सम्भोग या उस जैसी चीज़ न की हो और वो वजू किये हुए हो।

वज़ू के फ़र्ज़

कुरआन मजीद में वज़ू का हुक्म देते हुए अल्लाह तआला का इरशाद हैः "ऐ ईमान वालों जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हो तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को कोहनियों समेत धो लिया करो और अपने सरों का मसह कर लिया करो और पैरों को टखने समेत धो लिया करो।" (अलमाइदाः 6)

इस आयत में चार चीज़ों का ज़िक्र है और ये चारों वज़ू में फ़र्ज़ हैंः

1– पूरा चेहरा धोना

2– कोहनियों तक हाथ धोना

3– चौथाई सर का मसह करना

4– टखनों तक दोनों पैर धोना।

वज़ू की सुन्नतें

वज़ू के अन्दर निम्नलिखित चीज़ें सुन्नत हैं। वज़ू करने वालों को इनका ख़्याल रखना चाहिये ताकि वज़ू करने का पूरा सवाब हासिल हो।

1– वज़ू करते वक़्त नियत करना इसलिये कि हदीस शरीफ़ में किसी भी काम के वक़्त नियत बहुत बतायी गयी है, इरशाद है, "हर काम का दारोमदार नियत पर है" इसी हदीस की वजह से कई उलमा के नज़दीक नियत फ़र्ज़ में शामिल है, लेकिन ये ख़्याल रहे कि नियत का मतलब दिल में ये इरादा करना है कि पाकी के उसूल या रफ़ए हदस के लिये वज़ू कर रहा हूं, ज़बान से नियत करने की ज़रूरत नहीं है।

2– वज़ू शुरू करने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना। ये सुन्नत बिस्मिल्लाह पढ़ने से अदा हो जायेगी तिबरानी की एक रिवायत में ये शब्द आये हुए हैं, उनको भी पढ़ा जा सकता है। (हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से मरवी है फ़रमाते हैंः नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः अबूहुरैरा जब वज़ू किया करो तो कहो, बिस्मिल्लाह वल्हमदुलिल्लाह इसलिये कि तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिये लगे हुए फ़रिश्ते बराबर तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे, यहां तक कि तुम्हें इस वज़ू हदस लाहक़ हो जाये) (तिबरानी सग़ीरः 1/31)

3– शुरूआत में तीन बार गट्टों तक हाथ धोना, इसलिये कि मुसनद अहमद व नसई में हज़रत औस सक़नी रज़ि0 कि रिवायत है कि मैंने देखा है कि नबी करीम स0अ0 ने वज़ू किया और तीन बार अपनी हथेलियां धोईं।

4 – मिस्वाक करना, इसलिये कि हदीसों में इस बात की बहुत ताकीद और फ़ज़ीलतें आयी हैं। एक हदीस शरीफ़ में आंहज़रत स0अ0 का इरशाद हैः अगर मुझे ये डर न होता कि उम्मत को परेशानी हो जायेगी तो मैं हर वज़ू के वक़्त मिस्वाक का हुक्म देता।

और हज़रत आयशा रज़ि0 रिवायत करती हैं कि नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः मिस्वाक मुंह को साफ़ कर देती है और अल्लाह तआला को राज़ी करने वाली चीज़ है।

हज़रत आयशा रज़ि0 की एक दूसरी रिवायत में है कि आंहज़रत स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः जो नमाज़ मिस्वाक करके पढ़ी जाये वो बग़ैर मिस्वाक करने वाली नमाज़ से सत्तर गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है।

5– तीन बार कुल्ली करना, इसीलिये अबूदाऊद में हज़रत लुक़ैत बिन सबरह रज़ि0 की रिवायत है कि आंहज़रत स0अ ने इरशाद फ़रमायाः वज़ू करो तो कुल्ली कर लिया करो।

6– तीन बार नाक में पानी डालना, इसलिये कि हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः जब तुममें से कोई वज़ू करे तो नाम में पानी डाले फिर बाहर करे।

7– दाढ़ी में ख़िलाल करना, इसके लिये हज़रत उस्मान रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 अपनी दाढ़ी में ख़िलाल किया करते थे। दाढ़ी में ख़िलाल करने की मसनून शक्ल ये है कि दायें हाथ की हथेली को गले की तरफ़ करके तर उंगलियों को ठोड़ी के नीचे ले जाकर दाढ़ी के बीच से ऊपर को निकाल लें। ये तरीक़ा अबू दाऊद में हज़रत अनस रज़ि0 की रिवायत में साफ़ तौर पर आया है।

8– उंगलियों में ख़िलाल करना इसलिये कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 की रिवायत है कि आंहज़रत स0अ0 ने फ़रमायाः जब वज़ू किया करो तो अपने दोनों हाथ और पैर की उंगलियों का ख़िलाल किया करो।

हाथ की उंगलियों में ख़िलाल करने का तरीक़ा ये है कि एक हाथ की हथेली दूसरे हाथ के पीछ रखकर तर उंगलियां एक दूसरे में डाल दी जायें, जबकि पैरों में ख़िलाल करने के लिये बायें हाथ की छोटी उंगली इस्तेमाल की जाये और बेहतर ये है कि दायें पैर की छोटी उंगली से ख़िलाल की शुरूआत करके बायें पैर की छोटी उंगली पर ख़त्म करे।

9– वज़ू के अंगों का तीन–तीन बार धोना। जबकि वज़ू हर हिस्से को एक–एक बार धोने से भी हो जाता है, लेकिन आप स0अ0 का नियम ज़्यादातर तीन बार धोने का था। एक बार आप स0अ0 ने अंगों को तीन–तीन बार धोया और फ़रमायाः ये मेरा और मुझसे पहले के नबियों के वज़ू का तरीक़ा है, जो इससे ज़्यादा करे उसने गुनाह, ज़ुल्म व ज़्यादती किया, अलबत्ता अगर किसी को शक हो जाये कि कितनी बार धोया है या दिल के सुकून के लिये ज़्यादा धोने में बुराई नहीं है।

10– पूरे सर का मसह करना, हनफ़ियों के नज़दीक अगर चौथाई सर का मसह किया जाये तो मसह का फ़र्ज़ पूरा हो जाता है। लेकिन सुन्नत ये है कि पूरे सर का मसह किया जाये। इसीलिये बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि0 की रिवायत आती है कि आहंहज़रत स0अ0 ने अपने दोनों हाथों कसे मसह किया और इक़बाल व अदबार किया, सर के सामने के हिस्से से शुरूआत की फिर गुद्दी तक ले गये फिर जिस जगह से ले गये थे उसी जगह हाथ वापस लौटा लिये।

11– कानों का मसह करना, सर का मसह करने के बाद अलग से पानी लिये बग़ैर कानों का मसह किया जा सकता है। अबूदाऊद में इसका तरीक़ा बताते हुए आंहज़रत स0अ0 का काम नक़ल किया गया हैः "आंहज़रत स0अ0 ने सर और कानों का मसह किया, कान के अन्दरूनी हिस्सों का शहादत की उंगलियों से और बाहरी हिस्से का अंगूठे से।"

12– तरतीब वार वज़ू करना, तरतीब के ख़िलाफ़ किया तो सुन्नत के ख़िलाफ़ होगा।

13– एक अंग के बाद दूसरे अंग को तुरन्त धोना, अगर इतनी देर कर दी पहला अंग सूख जाये तो सुन्नत के ख़िलाफ़ होगा।

14– हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया जिसने अच्छी तरह वज़ू किया, अबू दाऊद में है कि फिर आसमान की ओर सर उठाकर कहाः

"मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं वो अकेला है और उसका कोई शरीक नहीं। और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद स0अ0 उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। या अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों में से बना दे और मुझे पाक रहने वालों में कर दे।"

तो उसके लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे जिससे चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाये।

निम्नलिखित चीज़े होने पर वज़ू टूट जाता हैः

1– सबीलैन (मल या मूत्र द्वार से निकलने वाली कोई भी चीज़) जैसे मल, मूत्र या हवा इत्यादि। इसलिये कि कुरआन मजीद में हैः "या तुममें से कोई पाख़ाना से आये।" और हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 की रिवायत है कि आंहज़रत स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः जब तुममें से किसी को हद्स

(मल–मूत्र) लगे तो जब तक वज़ू न कर ले अल्लाह तआला उसकी नमाज़ नहीं कुबूल फ़रमाता।

2– ऐसी नींद जिससे जिस्म के अंग ढीले हो जायें।

3– जुनून या बेहोशी से अक़्ल का बेकार हो जाना।

4– बदन के किसी हिस्से से ख़ून या पीप निकलना।

5– मुंह भर कर क़ै करना। इसलिये कि हदीस शरीफ़ में है कि जिसको नमाज़ में क़ै हो जाये या नकसीर फूट जाये तो वो लौट जाये और वज़ू करे।

6– रुकू व सजदे वाली नमाज़ में क़हक़हा लगाना।

7– शर्मगाह का बग़ैर किसी हायल का शर्मगाह से मिलाना।

मेडिकल जांच के लिये ख़ून निकालना

अगर किसी ग़रज़ से बदन से ख़ून निकलवाया तो इससे भी वज़ू टूट जायेगा। और अगर इन्जेक्शन लगवाया और अगर बदन से ख़ून निकलकर सुई में नहीं आया, न बाद में जिस्म में इधर उधर बहा तो उससे भी वज़ू नहीं टूटेगा। दूसरी सूरत में वज़ू टूट जायेगा।

लोगों में प्रचलित है कि वज़ू करने के बाद अगर कपड़े उतार दे या अपना सतर देख ले तो वज़ू टूट जायेगा तो ध्यान रहे कि ये दोनों चीज़ें वज़ू तोड़ने वाली चीज़ों में नहीं है, जबकि बिलावजह ऐसा नहीं करना चाहिये।

इसी तरह वज़ू के बाद अश्लील बातें नहीं करनी चाहिये, लेकिन इससे वज़ू टूटता नहीं है। वल्लाहु आलम

शेष : ये बेहतर है कि शब्दों के बजाय ...

इस्लाम के हामियों व दुश्मनों, इस्लामी जागरूकता को उन्नति देने वालों और सहयूनी और नसरानी ताक़तों के हाशिया बरदारों के बीच मश्रिक़ व मग़रिब में जो जंग चल रही है उसका मुक़ाबला पूरी साबित क़दमी के साथ ज़रूरी है। इस सिलसिले में हरगिज़ कोई कोताही नहीं होनी चाहिये। अधिपत्य की प्राप्ति के लिये जान तोड़ कोशिश करना आवश्यक है लेकिन ये पूरा एक महाज़ है इसके साथ और महाज़ों पर काम करना भी आवश्यक है। जिनको हमने पीठ के पीछे डाल दिया है और आज तक उनसे ग़ाफ़िल हैं। दावत व तब्लीग़, श्रेष्ठ आचरण, और हिकमत के क्षेत्र में भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये, ताकि अल्लाह तआला के फ़रमान की इत्तेबा पूरे तौर पर हो सके।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"आप अपने रब की राह की तरफ़ इल्म की बातों और अच्छी नसीहतों से बुलाइये और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस कीजिये।" (नहलः 125)

"और अगर कोई शख़्स मुश्रिकीन में से आप से पनाह मांगे तो आप उसको पनाह दीजिये ताकि वो अल्लाह के कलाम को सुन ले फिर उसको उसकी अमन की जगह पहुंचा दीजिये।" (तौबाः 06)

ज़िम्मेदारी से ग़फ़लत का अन्जाम

"ये दुनिया ख़त्म होने वाली है, इस ज़िन्दगी की हर चीज़ ख़त्म होने वाली है, दौलत ख़त्म होने वाली, इज़्ज़त ख़त्म होने वाली, सत्तासीन सुन लें कि ये सत्ता उनकी जाने वाली है, दौलत वाले सुन लें कि दौलत उनसे बेवफ़ाई करने वाली है, सोहबत करने वाले सुन लें कि सोहबत उनसे मुहं चुराने वाली है, जो चीज़ बाक़ी रहेगी वो सिर्फ़ अल्लाह का नाम है और अल्लाह के रास्ते में मेहनते हैं और अल्लाह के दीन के लिये मेहनतें हैं, बड़ा ग़नीमत वक़्त है जो गुज़र रहा है, इसमें अगर तुमने अपने कारोबार से वक़्त निकाल करके हिदायत व तब्लीग़ का अपने अन्दर तरीक़ा पैदा किया और फिर उसके लिये कोशिश कर ली तो अल्लाह तआला तुम्हारे ईनाम में दुनिया में तुमको बहुत दे देगा और आख़िरत में तुमको जन्नत अता फ़रमायेगा और अगर तुमने ऐसा न किया तो याद रखो तुम इस मुल्क में नहीं रह सकते, ये मैं आज सियासी आदमी की हैसियत से नहीं बल्कि उस रोशनी में जो अल्लाह तआला ने हर मुसलमान को अता फ़रमायी है उस रोशनी में ये कह रहा हूं कि इस देश में तुम्हारा रहना मुश्किल हो जायेगा अगर तुमने दीन के लिये ख़ुलूस के साथ काम न किया और जब वो हालत पैदा हो गयी तो उस वक़्त न तुम्हारी दुकानें बचेंगी, याद रखो हिफ़ाज़त का सामान ऊपर से होता है, किसी देश में मुसलमानों की हिफ़ाज़त का ज़रिया सिर्फ़ ये है कि वो दीन के लिये मेहनत करें और दीन को इतना ताक़तवर बनायें कि फिर अल्लाह तआला इस कथन की हिफ़ाज़त अपनी तरफ़ से फ़रमाये, उनकी नुसरत ख़ुदा की तरफ़ से होती है, फिर उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह० (तोहफ़ा–ए–बर्मा)

बीवी की
बदअख़लाक़ी पर सब्र

मुफ़्ती मेराजुद्दीन

"और उन औरतों के साथ ख़ूबी से गुज़र किया करो।" (सूरह निसा)

अगर बीवी बुरे मिज़ाज की हो, बद अख़लाक़ हो और पति को तंग व परेशान करती हो, लेकिन पति उस पर सब्र करता हो और उसकी तकलीफ़ों को बर्दाश्त करता हो और उसके साथ अच्छा सुलूक करता हो तो अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के दर्जे में शामिल फ़रमा देते हैं और ऐसे लोग सब्र करने वालों की जमाअत में शामिल होंगे।

वाक़्या है कि एक शख़्स जो इबादतगुज़ार था और अपनी बीवी के साथ भी अच्छा सुलूक करता था। बीवी के इन्तिक़ाल के बाद उस शख़्स से दूसरे निकाह की पेशकश की गयी, मगर वो दूसरी औरत के साथ निकाह करने को तैयार न हुआ और निकाह से मना कर दिया कि बस "तन्हाई और अकेलेपन ही में मेरे दिल को ज़्यादा सुकून है" एक हफ़्ते बाद उसने ख़्वाब देखा कि आसमानों के दरवाज़े खुले हुए हैं और उनसे कुछ लोग नीचे उतर रहे हैं, और हवाओं में आ रहे हैं और लाइन से एक के पीछे एक चल रहे हैं। जब भी उनमें से कोई शख़्स किसी की तरफ़ देखता तो वो अपने से पीछे वाले शख़्स से कहताः "यही है वो मनहूस और बदबख़्त आदमी" तो पीछे वाला कहता कि "जी हां" यही है। यहां तक कि उनमें का आख़िरी शख़्स जब गुज़रा तो मैने उससे पूछा कि किसको मनहूस कह रहे हो? तो उसने बताया कि तुम को। मैंने पूछा कि इसकी क्या वजह है?उसने बतायाः कि हम तुम्हारे आमाल को मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के आमाल के साथ उठाकर ले जाते थे और एक हफ़्ते से तुम्हारे आमाल जिहाद में पीछे रह जाने वाले लोगों के साथ ले जा रहे हैं। हमें मालूम नहीं है कि क्या हादसा पेश आ गया है?जब ये ख़्वाब देखा तो उन बुज़ुर्ग को फ़ौरन तम्बीह हुआ और अपने साथियों से कहाः कि मेरा निकाह करा दो फिर निकाह कर लिया।

पता चला कि बीवी के ज़रिये दी गयी तकलीफ़ पर सब्र करने और उनको बर्दाश्त करने पर अल्लाह तआला के यहां मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह का दर्जा आदमी को मिला जाता है। (रूहुल बयानः 1/357)

जनाब रसूलुल्लाह स0अ0 अपनी बीवियों के साथ बहुत ही अच्छा सुलूक फ़रमाते थे। और लोगों को उनके साथ अच्छा सुलूक करने और नर्मी बरतने की ताकीद फ़रमाते थे और उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती से मना फ़रमाते थे। इसीलिये आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः कि ऐ लोगों! बेशक औरतें तुम्हारे पास हैं, अल्लाह तआला की अमानत के ज़रिये तुमने उनको हासिल किया है और उसके कलिमे के ज़रिये तुमने उनकी शर्मगाहों को हलाल किया है, और तुम्हारे उन पर कुछ हक़ हैं।

तुम्हारे हक़ में से एक हक़ ये है कि तुम्हारे बिस्तर पर किसी को न आने दें, और किसी भी नेकी के काम में तुम्हारी नाफ़रमानी न करें और जब वो इसको अन्जाम दें दे तो तुम्हारे ऊपर उनको खिलाना और पिलाना नियमानुसार ज़रूरी है।

हज़रत अकरमा रज़ि0 से मनकूल है कि औरत का हक़ शौहर पर ये है कि वो औरत के साथ अच्छी तरह से रहे और उसको अपनी हैसियत के मुताबिक़ खाने–पीने दे।

एक हदीस शरीफ़ में हज़रत नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः कि कोई मोमिन मर्द किसी मोमिना औरत से बुग़्ज़ न रखे और अगर औरत कि किसी आदत को वो नापसंद करता है तो उसकी दूसरी कोई आदत ऐसी भी होगी जिसको वो पसंद करे। इस हदीस शरीफ़ में हज़रत नबी करीम स0अ0 ने एक अहम बिन्दु की ओर इशारा फ़रमाया है कि बे ऐब साथी तो हाथ आ ही नहीं सकता और जो शख़्स बेऐब साथी और साथ ढूंढ़ता है वो हमेशा बेदोस्त ही रह जाता है। इसीलिये देखिये उसमें कोई ख़ूबी है या नहीं?यक़ीनन हर शख़्स के अन्दर कोई न कोई ख़ूबी ज़रूर होती है, अतः उसकी ख़ूबी के कमाल को देखते हुए, उसके ऐब पर नज़र न डालिये, इस तरह औरत के अन्दर जो विशेषतांए हैं और जो ख़ूबियां हैं उसमें भी जो अच्छी आदतें है उसको सामने रखा जाये और जो बुरी आदतें और कमज़ोरियां हैं उनसे नज़र हटायी जाये। बेऐब कोई इन्सान नहीं है और औरत तो अपनी प्रकृति में ही टेढ़ी है, सख़्ती के ज़रिये उसके इस टेढ़ेपन को दूर नहीं किया जा सकता है।

इसीलिये नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः कि मेरी तरफ़ से औरत के बारे में ख़ैर की वसीयत को कुबूल

करो, इसलिये कि वो पसली से पैदा की गयी हैं और सबसे टेढ़ी पसली ऊपर वाली होती हैं, उसी टेढ़ी पसली से औरत को पैदा किया गया है, अतः टेढ़ापन तो उसकी प्राकृतिक विशेषता है। अगर तुम उसको सीधा करने लगे तो तुम उसको तोड़ दोगे (यानि तलाक़ तक नौबत पहुंचेगी) और अगर तुम उसको यूं ही छोड़े रखोगे तो हमेशा टेढ़ी ही रहेगी (इसीलिये उसके टेढ़ेपन के साथ उससे काम लेते रहो) इसलिये उनके साथ मेरी तरफ़ से ख़ैर व भलाई की वसीयत कुबूल करो।

एक हदीस शरीफ़ में आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः कि तुममें सबसे बेहतर शख़्स वो है जो अपने बीवी–बच्चों के साथ अच्छा सुलूक करे और बेहतर मामला करने वाला हो और तुममें से अपनी बीवी के साथ सबसे अच्छा मामला करने वाला हो और जब तुममें से किसी का इन्तिक़ाल हो जाये तो उसकी बुराई करना बन्द कर दो।

हकीम बिन मुआविया रह0 अपने वालिद से नक़ल करते हैं, वो फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत रसूलुल्लाह स0अ0 से मालूम कियाः कि बीवी का हक़ उसके पति पर क्या है? आप स0अ0 ने जवाब दियाः कि जब तुम कोई चीज़ खाओ तो उसे भी खिलाओ और जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ, और उसके चेहरे पर मत मारो, उसको सख़्त और बुरी बात मत कहो, उसके साथ बातचीत बन्द मत करो, मगर घर में यानि उससे नाराज़ होकर कहीं बाहर जाकर अलग रहना शुरू मत करो कि वो राज़ी करना चाहे तो बाहर जाकर कैसे राज़ी करे, बल्कि घर में रहो ताकि वो अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा होकर तुमसे माफ़ी मांगना चाहे तो माफ़ी मांग सके।

एक हदीस शरीफ़ में आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः कि मुकम्मल ईमान वाला शख़्स वो है जो सब लोगों के साथ अच्छे अख़लाक़ का बर्ताव करे और अपने घर वालों के साथ नर्मी और मेहरबानी का मामला करने वाला हो।

हज़रत नबी करीम स0अ0 अपनी बीवियों के साथ बहुत ही मेहरबान और हंसमुख रहते थे। इसीलिये एक हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत नबी करीम स0अ0 एक बार सफ़र में थे, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 भी आप स0अ0 के साथ थीं, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 कहती हैं कि मैं और हज़रत नबी करीम स0अ0 ने पैदल दौड़ने में आपस में मुक़ाबला किया, मैं दौड़ में आप स0अ0 से आगे निकल गयी (एक मुद्दत गुज़रने के बाद) फिर जब फ़रबा हो गयी तो हम दोनों में दौड़ हुई और इस बार रसूलुल्लाह स0अ0 मुझसे आगे निकल गये और फिर आंहज़रत स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि, मेरा इस बार तुमसे आगे निकल जाना तुम्हारे पहली बार आगे निकल जाने के बदले में है, तुम पहली बार जीत गयीं थीं, इस बार मैं जीत गया।

ज़रा ग़ौर कीजिये! आप स0अ0 अपनी बीवी के साथ कैसी ख़ुशगवार ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। ऊपर दी गयी हदीस बीवी के साथ अच्छे सुलूक का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि0 फ़रमाते हैंः हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने हज़रत मुहम्मद स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये दरवाज़े पर खड़े होकर घर के अन्दर आने की इजाज़त मांगी। उस वक़्त हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने सुना कि हज़रत आयशा रज़ि0 तेज़ आवाज़ से बोल रही थीं, उनकी आवाज़ हज़रत रसूलुल्लाह स0अ0 की आवाज़ से ऊंची हो रही थी, इसीलिये हज़रत अबूबकर रज़ि0 जब घर में दाख़िल हुए तो उन्होंने हज़रत आयशा रज़ि0 का हाथ पकड़ लिया और तमाचा मारने का इरादा किया और फ़रमाने लगे कि ख़बरदार! आइन्दा मैं तुम्हें रसूलुल्लाह स0अ0 से ऊंची आवाज़ में बोलते न देखूं, हज़रत नबी करीम स0अ0 ने जब ये देखा कि हज़रत आयशा रज़ि0 पर डांट पड़ने लगी और पिटाई भी क़रीब है तो हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि0 को मारने से रोकने लगे फिर जब हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि0 ग़ुस्से की हालत में बाहर निकलकर चले गये तो आप स0अ0 ने उसके बाद हज़रत आयशा से फ़रमायाः कि तुमने देख लिया कि मैंने तुमको इस आदमी से किस तरह बचाया। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि कुछ दिनों के बाद हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि0 फिर घर पर आये और अन्दर आने की इजाज़त मांगी और इजाज़त के बाद घर में दाख़िल हुए, देखा कि मैं और आप स0अ0 आपस में सुलह सफ़ाई के साथ बैठे हैं, आंहज़रत स0अ0 से हज़रत अबूबकर रज़ि0 ने फ़रमायाः कि जिस तरह तुमने मुझे अपनी लड़ाई में शरीक किया था, उसी तरह अपनी सुलह में भी शरीक करो। अतः आपको सुलह में शरीक कर लिया गया और फ़रमाया गयाः कि हमने शरीक कर लिया है। (मिश्कात शरीफ़: 417)

नौजवान लड़को और लड़कियों की देखभाल ज़रूरी

समाज जिस तेज़ी के साथ बदल रहा है। उसने मुसलमान उम्मत के सामने अनेकों प्रकार की समस्यांए खड़ी कर दी हैं। मुस्लिम समाज में आये दिन ऐसी चीज़ें दाख़िल हो रही हैं जो इस्लामी समाज के विपरीत हैं और मुसलमानों की योग्यताओं को नष्ट कर रही हैं। विशेषतयः पश्चिमी समाज की चकाचौंध अब मुस्लिम नौजवानों और मुस्लिम लड़कियों को भी प्रभावित करने लगी हैं। इसीलिये मुसलमानों की नई नस्ल अपने अन्दाज़ व पहनावे से नई सभ्यता से प्रभावित होती नज़र आ रही है। नयी नस्ल का पश्चिमी सभ्यता से इस हद तक प्रभावित होना और अपने हाव–भाव को ताक़ पर रखकर ग़ैरों का लिबास और उनका तौर–तरीक़ा अपनाना मुस्लिम समाज के भविष्य के बहुत ही ख़तरनाक बात है। दूसरी ओर मुसलमानों की नयी नस्ल दीनी व व्यवहारिक प्रशिक्षण से वंचित होने और इस्लामी शिक्षाओं से अपरिचित होने के कारण उन ख़्यालों व विचारों से प्रभावित हो जाती है जो इस्लाम के विपरीत हैं और इस्लाम में उनके लिये कोई जगह नहीं। नई नस्ल के इस प्रकार के इस्लाम विरोधी विचारों में लिप्त होने के बहुत से कारण हैं। जिनमें से एक कारण तो ये है कि वो इस्लामी सभ्यता व समाज को देख नहीं पाते। जब बच्चे सुबह को टीवी आन करते हैं तो उस पर ऐसे कल्चर का अनुभव करते हैं जो नंगी सभ्यता का प्रचारक होता है और मुस्लिम सभ्यता का कोई विचार इसमें मौजूद नहीं होता। जब बच्चे स्कूल जाते हैं तो वहां भी ऐसा ही कल्चर देखते हैं जिसमें मुस्लिम सभ्यता नाम की नहीं पायी जाती, बल्कि इस कल्चर में पश्चिमी सभ्यता और अश्लीलता के नज़ारे हर लम्हा नज़र आते हैं। अतः इन बच्चों में धीरे–धीरे वही असर पाया जाने लगता है।

मुसलमानों के पास अच्छी शिक्षण संस्थांए न होने के कारण अब मुसलमान माता–पिता अपने बच्चों को ऐसे स्कूलों पर भेजने को आमादा होते जा रहे हैं जिन पर ईसाई मिशनरी, या दूसरे नज़रिये रखने वाले लोगों का असर व रसूख होता है। इन स्कूलों में धर्म, व्यवहारिकता और आत्मिकता का दूर–दूर तक नाम व निशान नहीं होता। हां अश्लील कल्चर व सभ्यता को बढ़ावा देने वाली बहुत सी चीज़ें वहां ज़रूर पायी जाती हैं। वहां लड़कों और लड़कियों को एक साथ शिक्षा दी जाती है जिसके कारण अजनबी लड़के और लड़कियां एक दूसरे के साथ खुले तौर पर बात चीत करते हैं। यहां तक कि बात आगे बढ़ जाती है। ऐसे स्कूलों, कॉलिजो व यूनिवर्सटियों में जहां मुस्लिम लड़के और लड़कियां दोनों होते हैं वहां वो भी इससे प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह पाते। यहां तक कि बहुत से मुसलमान लड़कियों और ग़ैर मुस्लिम लड़कों के बीच दोस्ती परवान चढ़ने लगती है। जो आगे चलकर ख़तरनाक रुख़ अपना लेती है और कभी–कभी बात कोर्ट मैरिज तक पहुंच जाती है।

मुस्लिम लड़कियों के ग़ैर मुस्लिम लड़कों के साथ कोर्ट मैरिज की घटनाओं में आये दिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है। आख़िर किस तरह मुस्लिम लड़कियों को ग़ैर मुस्लिम नौजवानों के साथ शादी करने से रोका जाये?इस क्रम में मां–बाप अहम रोल अदा कर सकते हैं। सभी मुसलमान मां–बाप को चाहिये कि वो शुरू ही से अपने बच्चों की देखभाल करें। जब बच्चे छोटे हो तो उन्हें दीनी माहौल दें। क़ुरआन करीम पढ़वायें और उन्हें दीनी व अख़लाक़ी तालीम दें। साथ ही अपने घर के माहौल को साफ़ सुथरा रखें। सुबह ख़ुद भी जल्दी जागें और बच्चों को भी जगांए। फिर नमाज़ ख़ुद भी पढ़ो और बच्चों को भी इसकी हिदायत करें। नमाज़ के बाद क़ुरआन की तिलावत ज़रूर करें। इससे दिलो जान को सुकून मिलता है। घर में बरकत व रहमत के दरवाज़े खुल जाते हैं और इसका बच्चों का बड़ा गहरा असर होता है।

बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करते हुए इन चीज़ों पर ख़ास तौर पर ध्यान दिया जाये कि जिन स्कूलों में उनको शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा जा रहा है, उन स्कूलों का माहौल कैसा है?उसमें साथ में पढ़ाई होती है या अलग–अलग?जहां मिली–जुली शिक्षा हो वहां शिक्षा की प्राप्ति से अपनी लड़कियों को सुरक्षित रखा जाये। गर्ल्स स्कूलों में बच्ची का दाख़िला कराते समय इस बात की जानकारी लेना ज़रूरी है कि इन स्कूलों का माहौल कैसा है, वहां अजनबी मर्द तो नहीं आते।

इन्जील बरनाबास

मौलाना अब्दुर्रहीम हसनी

आज जो किताबों में "इन्जील" के नाम से मशहूर है उनसे मुराद हज़रत ईसा अलै0 की जीवनी है, जिसे बहुत से लोगों ने लिखा है, लेकिन ईसाईयों ने उन बहुत सी इन्जीलों में से सिर्फ़ चार इन्जीलों "मती– मरक़स– लोक़ा– योहन्ना" ही को विश्वस्नीय माना है। इन इन्जीलों में से एक इन्जील है जो बरनाबास हवारी की ओर मन्सूब है, लेकिन ईसाई लोग उसको स्वीकार नहीं करते हैं। इन्जील बरनाबास, प्रचलित इन्जीलों में से बहुत सी बातों में से भिन्न है, लेकिन चार भिन्नतांए ऐसी हैं, जिन्हें केन्द्रीय महत्व प्राप्त है।

1– इस इन्जील में हज़रत ईसा अलै0 ने अपने "ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा" होने से साफ़ इनकार किया है।

2– इसमें हज़रत ईसा अलै0 ने बताया है कि वो "मसीह या मुसय्या" जिसकी ओर पुराने युग के सहीफ़ों में इशारा किया गया है उससे मुराद, मैं नहीं हूं बल्कि हज़रत मुहम्मद स0अ0 हैं जो आख़िरी नबी के रूप में भेजे जायेंगे।

3– बरनाबास हवारी का बयान है कि हज़रत ईसा अलै0 को सूली नहीं चढ़ाया गया बल्कि उनकी जगह "यहूद आह सिकरयूती" (एक यहूदी जो ईसा अलै0 का पीछा कर रहा था) की सूरत बदल दी गयी थी और उसको सूली पर चढ़ा दिया गय था। जबकि हज़रत ईसा अलै0 को अल्लाह ने आसमान पर उठा लिया था।

4– इस इन्जील बरनाबास में लिखा है कि हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अपने जिस बेटे को ज़िबह करने का इरादा किया था, वो हज़रत इसहाक़ अलै0 नहीं बल्कि हज़रत इस्माईल अलै0 थे।

"इन्जील बरनाबास" में हज़रत ईसा अलै0 ने हज़रत मुहम्मद स0अ0 के आने का इशारा दिया है। वो बातें बतायी हैं। हज़रत ईसा अलै0 ने फ़रमाया कि, "वो जिसको मुसय्या कहते है वो पहले पैदा किया गया और मेरे बाद आयेगा और जब मैंने उसको देखा तो तसल्ली भर कर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद! अल्लाह तुम्हारे साथ हो। शिष्यों ने जवाब में कहा कि ऐ मुअल्लिम! वो आदमी कौन हैं जिसके लिये तुम ये बात कह रहे हो और जो दुनिया में आने वाला है। यीशू ने दिली ख़ुशी के साथ जवाब दिया कि, बेशक वो मुहम्मद हैं, रसूलुल्लाह हैं।"

हज़रत ईसा अलै0 ने अपने बारे में भी फ़रमाया कि "मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरे बाद दुनिया मुझको माबूद समझेगी, जबकि अल्लाह के दरबार में मेरी जान खड़ी होने वाली है और बेशक मैं भी एक फ़ना होने वाला आदमी हूं, तमाम इन्सानों जैसा।"

पुराने ईसाई साहित्यों में इन्जील बरनाबास का ज़िक्र एक गुमशुदा किताब की हैसियत से मिलता है, लेकिन 1709ई0 में शाह प्रोशिया के एक मुशीर को जिसका नाम "क्रूमर" था ऐमस्टरडैम नामक स्थान पर किसी पुस्तकालय से एक किताब हाथ लगी जो "इटैलियन" भाषा में थी और उस पर लिखा हुआ था कि ये बरनाबास हवारी की लिखी हुई इन्जील है। क्रूमर ने ये किताब शहज़ादा "आयोजीन साफ़ोमी" को भेंट कर दी। इसके बाद 1738ई0 में आस्ट्रिया के पाया तख़्त वियाना के शाही पुस्तकालय में चली गयी और आजतक वहीं है। इसका अरबी में डाक्टर सईद मसीही आलिम ने अनुवाद किया। अल्लामा सैय्यद रशीद रज़ा मिस्री ने अपने एक सक्षिंप्त प्राक्कथन के साथ 1908ई0 में मिस्र से प्रकाशित किया। ये अरबी अनुवाद भारत में पहुंचा तो मौलवी मुहम्मद हलीम अन्सारी रूदौलवी ने इसका उर्दू अनुवाद किया जो 1916ई0 में लाहौर से प्रकाशित हुआ।

इन्जील बरनाबास की हक़ीक़त और उसकी अस्लियत की खोज के लिये ये मालूम करना आवश्यक है कि बरनाबास कौन हैं?और हवारियों में उनका स्थान क्या है?लोक़ा की किताब आमाल में है कि "और यूसुफ़ नाम का एक लावी था, जिसका लक़ब रसूलों ने बरनाबास यानि नसीहत का बेटा रखा था और जिसकी पैदाइश किपरिस की थी। इसका एक खेत था जिसे उसने बेचा और क़ीमत लाकर रसूलों के पांव में रख दी।" इससे एक बात तो ये मालूम हुई की बरनाबास हवारियों में श्रेष्ठ स्थान पर था और उनको बरनाबास यानि नसीत का बेटा नाम से ही पुकारते थे। दूसरी बात ये मालूम हुई कि बरनाबास ने अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर अपनी सारी पूंजी दीन के प्रचार में लगा दी। इसके अलावा बरनाबास ने ही "पोलिस" का सभी हवारियों से परिचय कराया था, लेकिन जब पोलिस अस्ल ईसवी दीन में परिवर्तन करके एक नये "धर्म" का आधार रखना शुरू किया तो बरनाबास और पोलिस के मध्य मतभेद हो गया, उस मतभेद से पहले ये दोनों अर्से तक एक दूसरे के साथ रहे और उन्होंने एक साथ ईसाईयत का प्रचार किया।

आलिमों की तौहीन से बचें

(आप स0अ0 ने फ़रमाया, आलिम की लग़ज़िश से बचो और उससे नाता मत तोड़ो और उसके लौट आने का इन्तिज़ार करो)

अगर आपको ये मालूम है कि फ़लां काम गुनाह है और आप ये देख रहे हो कि एक आलिम इस गुनाह के काम को कर रहा है और इस गुनाह में पड़ा हुआ है। पहला काम तो आप ये करो कि ये बिल्कुल मत सोचो इतना बड़ा आलिम ये गुनाह का काम कर रहा है तो मैं भी कर लूं बल्कि आप उस ग़लती और गुनाह से बचो और अल्लाह से उसके हक़ में दुआ करो। इस हदीस में उन लोगों की इस्लाह फ़रमायी गयी है जिन लोगों को जब किसी गुनाह से रोका जाता है और मना किया जाता है कि फ़लां काम नाजायज़ और गुनाह का है ये काम मत करो, तो वो लोग मानने और सुनने के बजाये फ़ौरन मिसालें देना शुरू कर देते हैं कि फ़लां आलिम तो ये काम करते हैं, फ़लां मौलाना ये काम करते हैं, अगर हमने भी कर लिया तो क्या हो गया?

आप स0अ0 ने पहले ही क़दम पर इस दलील की जड़ से काट कर दी कि आप उस आलिम की ग़लती की पैरवी मत करो, बल्कि आप उसकी अच्छाई की पैरवी करो। अगर वो गुनाह के काम में लगा है तो आपके दिल में ये हिम्मत न हो कि जब वो आलिम ये काम कर रहा है तो हम भी ये काम करें। ज़रा सोचो, अगर वो आलिम जहन्नम के रास्ते पर जा रहा है तो क्या आप भी जहन्नम के रास्ते पर जाओगे। अगर वो आग में कूद रहा है तो क्या आप भी उसको देखकर आग में कूद जाओगे। ज़ाहिर है कि आप ऐसा हरगिज़ नहीं करोगे क्योंकि आग में कूदना अपने आप को हलाक करना है। जिस तरह आप इससे बच रहे हो, उसी तरह आलिम की ग़लती पर भी बुरे काम की पैरवी से भी बचो।

इसी तरह से बहुत से आलिमों ने फ़रमाया कि वो आलिम जो सच्चा और सही माने में आलिम है तो इसका फ़तवा और उसका बताया हुआ मसला भी भरोसे के लायक़ होना ज़रूरी नहीं। जैसे अगर वो कोई ग़लत काम कर रहा है तो आप उससे पूछो कि ये काम जायज़ है या नहीं तो आलिम यही जवाब देगा कि ये काम नाजायज़ है। इसलिये आप उसके बताये हुए मसले की पैरवी तो करो मगर उसके ग़लत कामों की पैरवी मत करो। ये कहना बिल्कुल जायज़ नहीं कि फ़लां आलिम तो ये करते हैं इसलिये हम भी कर लें तो क्या बुरा है। इसकी मिसाल तो ऐसे ही है जैसे कोई शख़्स ये कहे कि इतने बड़े–बड़े मालदार लोग कुवें में कूद रहे हैं चलो हम भी कूद जायें। जिस तरह ये दलील ग़लत है उसी तरह वो भी ग़लत है।

कुछ लोग दूसरी ग़लती ये करते हैं कि जब वो किसी आलिम को किसी ग़लती पर देखकर उससे नाता तोड़ लेते हैं और उससे बदगुमान होकर बैठ जाते हैं। उनको बदनाम करना शुरू कर देते हैं कि मौलवी तो ऐसे होते हैं और फिर अक्सर उलमा की तौहीन में कहने लगते हैं कि आज कल तो उलमा बस ऐसे ही होते है।

आप स0अ0 ने इसकी भी काट कर दी है। अगर कोई आलिम गुनाह का काम कर रहा है तो उस कारण उससे संबंध मत तोड़ो, क्योंकि वो भी तो आप ही की तरह इन्सान है। जो हाड़–मांस और दिल तुम्हारे पास है वो उसके पास भी है। वो आलिम कोई आसमान से उतरा हुआ फ़रिश्ता नहीं। जो भावनाएं जो जज़्बात तुम्हारे अन्दर तुम्हारे दिल में आते हैं वही उसके दिल में भी आते होंगे। जिस तरह शैतान तुम्हारे पीछे लगा हुआ है, उसके पीछे भी लगा हुआ है बल्कि उस आलिम के पीछे तो ज़्यादा लगा रहता है कि किस तरह उससे गुनाह होता रहे।

अतः उसके गुनाह करने के कारण से उस आलिम से बिदक जाना और उससे बदज़न हो जाना सही नहीं। आप स0अ0 ने फ़रमाया उससे संबंध मत तोड़ो बल्कि उसके वापिस आने का इन्तिज़ार करो इसलिये कि उसके पास सही इल्म मौजूद है। अल्लाह से उसके हक़ में दुआ करो कि अल्लाह उसको सही राह पर ले आये। हमको आलिमों से नाता क़ायम रखना है, उनसे दूर नहीं जाना, इसलिये कि उनको देखना भी सवाब है। जिस तरह चरवाहा बकरियों से अलग हो जाता है या बकरियां चरवाहे से अलग हो जाती हैं तो शेर उनको खा जाता है, अगर हम इन आलिमों से अलग हो गये तो शैतान हमको जकड़ लेगा और हम जहन्नम के किनारे पर चले जायेगें। इसलिये हम उलमा के दामन को मज़बूती से थामे रखें। अल्लाह तआला हमको आलिमों की क़दर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। (आमीन)

अवतार

मौलाना मुसव्विर आलम नदवी

हिन्दु धर्म के अनुसार धर्म की पराकाष्ठा और अराजक तत्वों और अधर्मियों का नाश करने के लिये खुदा का.... नऊज़बिल्लाह... मानव या किसी दूसरे प्राणी का रूप धारण करके इस धरती पर जन्म लेने या किसी के अन्दर प्रवेश कर जाने को "अवतारवाद" कहते हैं और जो इस रूप में जन्म ले उसे "अवतार" कहते हैं। विवेकानन्द ब्रहमाचारी महाराज के अनुसार ये आस्था और शब्द "अवतार" पुराण के लेखकों की उपज है। सनातन धर्म का उद्गम "वेद" और "निरोक्त" है जिसके बग़ैर वेद को समझा ही नहीं जा सकता है। इसमें भी इसकी कोई चर्चा नहीं। (अन्तिम अवतार परिचयः 2)

"वेद" में मानव के मार्गदर्शन के लिये नबी और संदेष्टा के आने की बात अवश्य मिलती है लेकिन अवतार की नहीं। नबी और संदेष्टा के लिये वेद में "देवदूत, अग्निदूत" इत्यादि शब्दों का प्रयोग भी किया गया है। यदि अवतार शब्द का नियमानुसार अनुवाद किया जाये तो इसका वास्तविक अर्थ भी संदेष्टा ही निकलता है। इसके बारे में विवेकानन्द महाराज कहते हैं कि जिस प्रकार से "ईशदूत" और "अग्निदूत" का अनुवाद वेद के अनुसार ईश्वर का संदेष्टा निकलता है उसी प्रकार ईशअवतार का अनुवाद भी ईश्वर का अवतार होता है। ईश्वर और अवतार के बीच एक शब्द का छिपा हुआ है, यही भूल पुराण के लेखकों से हुई जिसके कारण ईश्वर स्वयं अवतार हो गया जो कि फ़साद की जड़ है।

"निरोक्त" के लेखक आचार्य यामसिक और ईश्वर चन्द विद्यासागर की व्याकरण की पुस्तक "विद्याकरण कुमुदी" और पण्डित गिरीश चन्द्र विद्यारतन की खोज के अनुसार ईश्वरअवतार का अनुवाद, "ईश्वर का संदेष्टा" होता है न कि स्वयं ईश्वर, जो किसी मानव या दानव का रूप धारण करके प्रकट हुआ हो। अब रही बात अवतार के प्रचलित अर्थ कि ये क्यों और कैसे हुआ, तो इसके बारे में विवेकानन्द महाराज कहते हैं कि पुराण के लेखकों ने जो कुछ किया है, ये उनका मत और उनकी बुद्धि है, उन्होंने अपने–अपने पुराण और अपने–अपने पुराणों में अपने–अपने पक्ष के अवतार को श्रेष्ठता देने के लिये कहा है। इसीलिये सभी पुराणों के अन्दर अवतारों की सूची में सारे अवतार समान प्रतीत नहीं होते, किसी पुराण में एक अवतार को इतना अधिक महत्व प्राप्त है कि उस जैसा कोई प्रतीत ही नहीं होता और दूसरे पुराणों में उसकी कोई बात ही नहीं है। कोई ईश्वर का अंश है तो कोई सम्पूर्ण ईश्वर। जबकि वेदों और उपनिशदों में ईश्वर को "जिसका कभी जन्म न हुआ हो" "जिसकी कोई सीमा न हो" "जिसकी कोई इन्तहा न हो" "सर्वव्यापी" "शुद्ध" इत्यादि कहा गया है। (ऋगवेदः 1–3–6, यजुर्वेदः 8–40)

उप्रोक्त विशेषताओं के अनुसार जब ईश्वर "शुद्ध" हर ऐब से पाक तो मानव या दूसरे प्राणियों का रूप धारण करके जन्म लेने की या प्रवेश कर जाने की जो विरोधाभास सामने आते हैं, वो किसी से छिपे नहीं हैं। साबित हुआ कि हिन्दु धर्म में अवतार का अर्थ न केवल ये कि इन्सानी सोच से हटकर ये एक आस्था है बल्कि वेदों और उपनिशदों के भी ख़िलाफ़ है।

क़ौम के निर्माण का आज़माइशी पहलू

इस्लाम में बदर की जंग जो तीन सौ तेरह मुसलमानों का कारनामा है हर वक़्त पैदा किया जा सकता था। मगर बदर के वक़ूअ के लिये तेरह साल के इन्तिज़ार की ज़रूरत पड़ी और जब तक ठोंक बजा कर और आज़माइशों की आग में तैयार कर उनको देख नहीं लिया गया उनको जंगों में नहीं लाया गया। इससे अन्दाज़ा होगा कि जमाअतों का निर्माण केवल ज़िद व हट, सब व शितम, तान व तन्ज़, शोर व गुल और नारों के शेर पढ़ने और चीख़ने से नहीं होता, बल्कि मक़सद की बुलन्दी, उससे लगाव, उसको पाने व उसको बचाने के लिये उच्च विचार, पुख़्ता सीरत और मज़बूत कैरेक्टर पैदा करना ज़रूरी है। इतिहास में ऐसी मिसालें अत्यधिक पायी जाती हैं कि जमाअतों ने अपने वहशियाना जोश और बहादुरी से किसी मक़सद को हासिल कर लिया, लेकिन उसको बचाने के लिये जो अख़लाक़ व कैरेक्टर चाहिये उसके न होने से उनके हाथ से वो मक़सद बहुत जल्द खो गया।

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी रह०

अनमोल वचन

इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित रह०

(पैदाइश ८० हिजरी, कूफ़ा - मृत्यु १५० हिजरी, बग़दाद)

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

"वो शख़्स महरूम है जिसको इमाम अबूहनीफ़ा के इल्म से हिस्सा नहीं मिला।" (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० - अमीरुल मोमीनीन फ़िल हदीस)

➢ मुसलमान को नमाज़ की तैयारी अज़ान की आवाज़ सुनते ही शुरू कर देना चाहिये।

➢ मौत को याद करने के लिये कभी–कभार कब्रिस्तान जाना फ़ायदेमन्द है।

➢ दिल की सख़्ती से बचने के लिये बेकार की बातों से परहेज़ ज़रूरी है।

➢ अगर कोई शख़्स बिदअत करता है और उसकी दावत भी देता है तो एक जानकार शख़्स के लिये ज़रूरी है कि वो इसका खुले तौर पर विरोध करे।

➢ काम वही करना चाहिये जो इन्सान के लायक़ का हो।

➢ माल कमाने से पहले इल्म हासिल करना ज़रूरी है ताकि जायज़ व नाजायज़ ज़रियों का पता चल सके।

➢ उस शख़्स से बढ़कर कोई वक़्त का ग़लत इस्तेमाल करने वाला नहीं हो सकता है जो इल्म तो हासिल करे लेकिन अपने हासिल किये हुए इल्म से ख़ुद ही फ़ायदा न उठा सके।

➢ दुनिया को पाने की ख़ातिर जो शख़्स इल्म हासिल करना चाहता है तो वो इल्म स्थायी नहीं होता।

➢ अस्ल ऐश की जिन्दगी वो है जिसमें अमन व सुकून के साथ इन्सान को पेट भर खाना, तन ढ़ांकने के लिये कपड़ा उपलब्ध हो सके।

➢ इन्सान अपना जो मामला अपने रब के साथ लोगों के सामने ज़ाहिर करता है उसको चाहिये कि तन्हाई में भी उसका ख़्याल रखे।

➢ अगर कोई वक़्त से पहले ही ओहदा मांगता है तो उसको ज़िल्लत का सामना करना पड़ता है।

➢ अमीरों व रईसों की मजलिसों में एक पढ़े लिखे को जाने से परहेज़ करना चाहिये ताकि वो उसको हिक़ारत की निगाह से न देखें।

➢ मालदारों से मामला ऐसा ही होना चाहिये जैसे आग से कि उससे इन्सान फ़ायदा भी उठाता है और दूर भी रहता है।

➢ लोगों के सवालों पर ज़रूरत के हिसाब से ही जवाब देना चाहिये, कभी–कभी ज़्यादा जवाब देना भी नुक़सान की वजह बन जाता है।

➢ एक पढ़े लिखे को हर एक के सामने दुनियावी बातें करना ठीक नहीं कहीं कोई ये न समझे कि इसको माल से बहुत मुहब्बत है।

➢ बहुत अच्छा लिबास इत्यादि पहनना ठीक नहीं। इससे आम तौर पर आदमी घमन्डी हो जाता है इसलिये इससे बचना चाहिये।

➢ इन्सान को उस वक़्त तक निकाह नहीं करना चाहिये जब तक कि उसको ये यक़ीन न हो जाये कि वो अपनी और अपनी बीवी की सभी ज़रूरतों को पूरा करने पर क़ादिर है।

➢ इल्म हासिल करते वक़्त इन्सान को दूसरे कामों से अपने आप को अलग रखना चाहिये।

➢ हक़ बोलने के लिये किसी भी बड़े आदमी की परवाह करना मोमिन के शान के खिलाफ़ है।

➢ हर परिचित व्यक्ति पर एतबार करने में उस सयम तक जल्दी नहीं करनी चाहिये जब तक कि उसको आज़मा न ले।

➢ दीन के इल्म का तक़ाज़ा ये है कि उसका हासिल करने वाला अपने ज़ाहिर व बातिन को उसके मुताबिक़ ढ़ाल ले।

मोसाद और उसकी गतिविधियाँ

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

"मोसाद" इस्राईल की एक गुप्तचर संस्था है, जिसका उद्देश्य दुनिया भर में फ़साद मचाना और इस्राईल के लाभों और उसकी स्थिरता की राहें आसान करना है। इसको बहुत ही उच्च स्तर पर नियन्त्रित किया जाता है। साधारणतयः इसकी कार्यवाहियां इतनी छिपी हुई होती हैं कि बड़ी–बड़ी घटनाएं इसके इशारों पर हो जाती हैं और किसी को ज़रा सी ख़बर तक नहीं होती। इसका कार्यक्षेत्र बहुत ही बड़ा है। दुनिया के लगभग सभी विकसित और विकासशील देशों में इसका नेटवर्क काम कर रहा है। पश्चिमी देशों और संयुक्त राष्ट्र में वर्तमान कई पूर्व कम्यूनिस्ट देशों में मोसाद के एजेन्ट कार्यरत हैं। इसका हेड क्वाटर "तिल अबीब" है।

मोसाद की स्थापना 13 दिसम्बर 1949 को हुई। इसका आधारभूत उद्देश्य दुनिया भर के यहूदियो को इस्राईल में आबाद करना था। 1 अप्रैल 1951 को उस समय के इस्राईल के प्रधानमंत्री डेविड बैंगोरियन एक ख़ुफ़िया एजेंसी के तौर पर इसकी नींव डाली। उसका कहना था कि इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य ये है कि हमें मालूम हो सके कि इस्राईल के आस–पास क्या हो रहा है। ऊपरी तौर से इस्राईल के लाभों की रक्षा के लिये बनायी गयी ये संस्था इस समय दुनिया भर में फ़साद फैलाने और दहशत फैलाने में बुनियादी किरदार अदा कर रही है। 1980 ई0 में इस संस्था के कार्यकर्ताओं की संख्यां डेढ़ हज़ार से अधिक थी किन्तु वर्तमान रिपोर्ट के अनुसार उसके विशेष कर्मचारियों की संख्यां 20 हज़ार से भी अधिक है। दुनिया भर में मौजूद इसके एजेन्टों की संख्यां पैंतीस हज़ार से अधिक है।

इराक़ में मोसाद की बढ़ती हुई कार्यवाहियां कोई नयी बात नहीं है। उसकी कार्यवाहियां उस समय से जारी हैं जब से बुश प्रशासन ने उस पर हमले की साज़िश रची थी। इराक़ में बढ़ती हुई ख़ूंरेज़ी और आये दिन होने वाली हिंसक घटनांए आम तौर पर "अलक़ायदा या गिरोही" खींचतान का नाम दिया जाता है लेकिन अब सबूतों की रोशनी में ये बात साबित हो चुकी है कि इन कार्यवाहियों के पीछे मोसाद का हाथ है। इसी प्रकार इराक़ में जारी नस्ली फ़साद मोसाद की साज़िशों और कोशिशों का ही नतीजा है।

मोसाद का उद्देश्य आंदोलन कारी शक्तियों के प्रभाव को समाप्त करना है। वहीं इसका अहम और बुनियादी मक़सद इराक़ को टुकड़ों में बांटना भी है। क्योंकि इराक़ के बंटवारे के बग़ैर नील से फ़रात तक "ग्रेट इस्राईल" का ख़्वाब पूरा नहीं हो सकता। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये इस्राईल अमरीका को पूरी तरह इस्तेमाल कर रहा है। इसीलिये इराक़ के बंटवारे से संबंधित क़रार दाद भी मन्जूर कर ली गयी हैं जिसके अनुसार एक हिस्सा सुन्नी वर्ग का होगा दूसरा शिया वर्ग का औरी तीसरा कुर्द क़बाइल को दिया जायेगा। इराक़ से अमरीकी सेना की वापसी को देखते हुए मोसाद को ये कार्यभर दिया गया है जिसमें शिया–सुन्नी को लड़वाते रहना है। इराक़ में जंग के दौरान अमरीकी फ़ौज को असलहा उपलब्ध कराने का काम मोसाद ने ही किया था। इसके अतिरिक्त मोसाद ने हालैन्ड के शहर ऐम्सटरडैम प्रापर्टी का एक बड़ा आफ़िस खोला है जिसकी आड़ में यहूदी पूंजीपतियों ने इराक़ में बड़ी–बड़ी ज़मीनें ख़रीदी है। संस्था स्थापित की है और इस समय इराक़ में पच्चीस से अधिक सैन्य व आर्थिक कम्पनियां स्थापित हैं। ये सारी कम्पनियां मोसाद के लिये ढाल का काम कर रही हैं।

मोसाद यहूदी उद्देश्यों के लिये प्रयासरत है और ये साफ़ है कि यहूदी केवल मुसलमान को ही अपना दुश्मन नहीं समझते बल्कि वो अपने सामने हर किसी को हक़ीर व ज़लील समझते हैं और हर वो व्यक्ति उनका दुश्मन है जिसके अन्दर इन्सानियत का थोड़ा सा भी जज़्बा है या वो व्यवहारिक मूल्यों का हामी है।

अल्लाह के लिये

अबुल अब्बास ख़ाँ

वो तीन दोस्त किसी मंज़िल की तरफ़ रवां थे। रास्ते पेचीदा और सफ़र लम्बा था। जंगल में चलते चलते रात हो गयी। रुकने की कोई मुनासिब जगह न मिल सकी। आख़िर एक ग़ार नज़र आया। तीनों उस ग़ार में जा पहुंचे और इत्मिनान की सांस ली कि अब रात सुकून से कट जायेगी। लेकिन ख़ुदा की मर्ज़ी रात में चट्टान खिसकी और आकर उस ग़ार के मुंह पर रुक गयी। बाहर निकलने का रास्ता बन्द हो गया। उन तीनों ने सारे जतन कर डाले लेकिन वो चट्टान टस से मस न हो सकी। आख़िर थक हार कर बैठ गये। उनकी निगाहों के सामने अंधेरा ही अंधेरा था और उस अंधेरे में मौत का शिकंजा कसता महसूस हो रहा था। लेकिन जब सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं और इन्सान हर दर से मायूस हो जाता है तो सिर्फ़ ख़ुदा का सहारा ही बचता है।

तीनों ने तय किया कि अपने काम का हवाला देकर दुआ करें जो हमने सिर्फ़ अल्लाह के लिये किया हो:

एक ने कहा: ऐ ख़ुदा! मेरे मां–बाप बूढ़े थे। मैं रोज़ रात में पहले उन्हें दूध देता उसके बाद अपने बच्चों को। इत्तेफ़ाक़ की बात है कि उस दिन जानवर के चारे की तलाश में बड़ी दूर तक निकल गया, वापस आया तो मां–बाप सो चुके थे। मैं दूध का प्याला लेकर उनके पास गया। लेकिन नींद से जगाना मुनासिब नहीं लगा रात भर प्याला लिये खड़ा रहा। सुबह हुई। उनकी आंखे खुली तौ मैंने उन्हें दूध पेश किया। पूरी रात मेरे बच्चे भूख से बिलकते रहे लेकिन मैंने अपने मां–बाप से पहले उन्हें दूध देना मुनासिब नहीं समझा।

ऐ ख़ुदा! ये काम मैंने सिर्फ़ तेरी रज़ा के लिये किया था। फिर अगर मैं अपने काम में मुख़लिस था तो हमसे इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे। ख़ुदा का हुक्म चट्टान थोड़ी खिसक गयी।

दूसरे ने कहा: ऐ रब्बुल इज़्ज़त! मेरे चचा की एक लड़की थी जिस पर मैं दिल व जान से फ़िदा था। उसको पाने की मैंने हर मुमकिन कोशिश की लेकिन मैं कामयाब न हो सका। एक बार इलाक़े में सूखा पड़ा, लोग दाने–दाने को मोहताज हो गये। वो परेशान हो कर मेरे पास आयी और उसने कुछ रूप्ये मांगे। मैंने इस शर्त पर उसे रक़म दी कि वो ख़ुद को मेरे सुपूर्द कर दे। उसकी मजबूरी ने उससे हां करवा दी। मैंने उसको अपनी गिरफ़्त में ले लिया। वो रोने लगी और शर्मिन्दा होकर कहने लगी कि ये हराम काम न करो। मेरी इज़्ज़त से न खेलो। उसकी बातें सुनकर मैंने उसे छोड़ दिया और वो रक़म भी उसे दे दी।

ऐ ख़ुदाए करीम! तू जानता है कि मैंने ये काम सिर्फ़ तेरी रज़ा को पाने के लिये किया था। तो अगर मैं मुख़लिस था तो हमसे इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे। अल्लाह के हुक्म से वो चट्टान खिसक गयी लेकिन अभी बाहर निकलना मुमकिन न था।

तीसरे ने कहा की ऐ परवरदिगार! मैंने कुछ लोगों को मज़दूरी पर रखा। काम ख़त्म होने के बाद सबने अपनी–अपनी मज़दूरी ले ली लेकिन एक शख़्स मज़दूरी लिये बग़ैर ही चला गया। मैंने उसकी मज़दूरी अमानत समझकर व्यापार में लगा दी। व्यापार ख़ूब फला–फूला। लेकिन एक दिन अचानक वो आदमी आ पहुंचा और कहने लगा कि मेरी मज़दूरी जा रह गयी थी वो मुझको दे दो। मैंने कहा कि जो जानवर, ऊंट, घोड़े, गाय, बकरी और ये गुलाम जो कुछ भी तुम देख रहे हो सब तुम्हारा है। उसे लगा कि मैं मज़ाक़ कर रहा हूं। लेकिन तफ़सील बताने पर जब उसे यक़ीन हुआ तो उसने वो सारी दौलत समेटी और अपने रास्ते हो लिया।

ऐ अल्लाह! अगर मैंने ये काम सिर्फ़ तेरी ख़ुशी के लिये किया था तो हमसे मुसीबत को दूर फ़रमा दीजिये। ख़ुदा ने उसकी दुआ क़ुबूल की और चटटान पूरी तरह से खिसक गयी। वो तीनों सलामती के साथ बाहर आये और ख़ुदा का शुक्र अदा किया और अपनी मंज़िल की तरफ़ चल दिये।

आज मुसलमान परेशान हाल है। वो दुआंए करता हैं, दुहाइयां देता है, अपनी किस्मत पर रोता है। ख़ुद को लाचार, बेबस, और मज़लूम समझता है लेकिन कभी ग़ौर करके नहीं देखता कि उसके आमाल नामें में एक भी ऐसा काम नहीं जो सिर्फ़ ख़ुदा के लिये हो।

आज कितने मुसलमान हैं जो ख़ुद अपने आप से ये कह सकते हैं कि उन्होंने कोई काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये किया है?!

कुरआन शरीफ़ की तिलावत

ज़बान की एक बड़ी ख़ूबी ये है कि वो अपने बनाने वाले और ताक़त बख़्शने वाले, अल्लाह तआला के कलाम (कुरआन शरीफ़) से तरोताज़ा है और उसकी तिलावत से लज़्ज़त लेती रहती है, जिसकी बरकत का क्या कहना। वो जितना ज़बान पर आयेगा लुत्फ़ बढ़ता जायेगा और रहमत व बरकत में इज़ाफ़ा होता जायेगा। ये मुबारक कलाम ज़बान के लिये दुनिया व आख़िरत का सरमाया है।

हदीस शरीफ़ में आता है:

"सिर्फ़ दो आदमी रश्क के क़ाबिल हैं, एक वो जिसको अल्लाह तआला ने कुरआन की नेमत दी फिर वो दिन रात का वक़्त उसमें लगाता रहता है, दूसरा वो जिसको अल्लाह तआला ने माल व दौलत से नवाज़ा और वो दिन रात ख़ुदा की राह में ख़र्च करता हो।"

दूसरी जगह हज़रत आयशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया:

"हर चीज़ के लिये कोई शराफ़त व इफ़्तिख़ार हुआ करता है, जिससे वो श्रेष्ठ होता है, मेरी उम्मत के लिये श्रेष्ठता की रौनक़ कुरआन शरीफ़ है।"

कैफ़ व सुरूर

कुरआन शरीफ़ की तिलावत करने में लज़्ज़त व सुरूर की कैफ़ियत महसूस होती है। और दिल व दिमाग़ पर उसके कितने अच्छे असर पड़ते हैं और ज़बान में कितनी मिठास पैदा होती है वो हर क़ारी महसूस करता है। इसका पढ़ना जितना लज़्ज़त है उसका सुनना भी उतनी ही लज़्ज़त है। ऐसा कलाम है कि ज़बान किसी तरह थकती नहीं। कैफ़ व सुरूर बढ़ता जाता है और बढ़ता जाता है।

मौलाना मुहमद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME:06

APRIL 2014

ISSUE:04

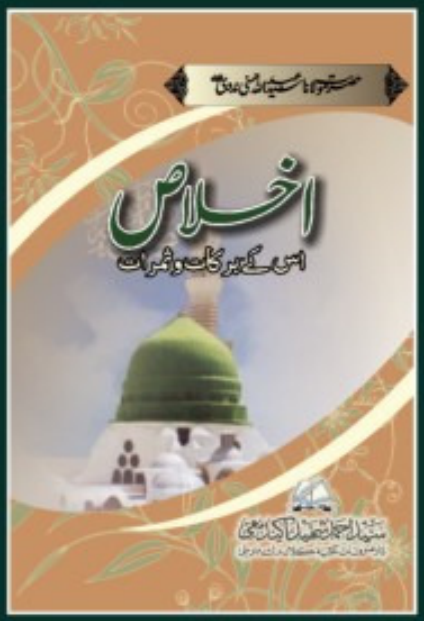

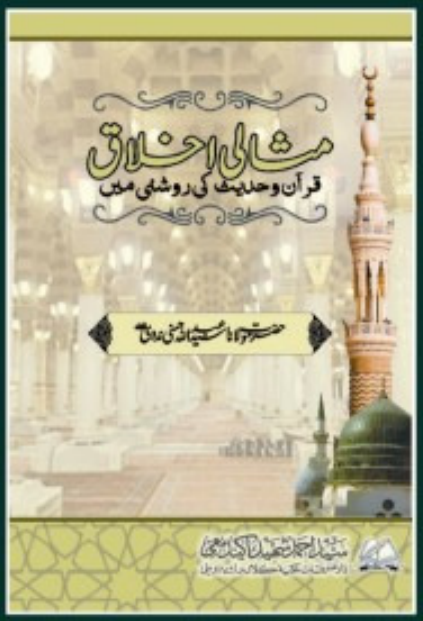

DECLARATION OF OWNERSHIP AND OTHER DETAILS

FORM 4 RULE 8

Name of Paper:	Payam-e-Arafat
Place of Publication:	Raebareli
Periodicity of Publication:	Monthly
Chief Editor:	Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
Nationality:	Indian
Address:	Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli (U.P.) 229001
Printer/Publisher:	Mohammad Hasan Nadwi
Nationality:	Indian
Address:	Maidanpur, Post. Takiya Kalan, Raebareli (U.P.) India
Ownership:	Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi

I, Mohammad Hasan Nadwi, printer/publisher declare that
the above information is correct to the best of my knowledge and belief.

(March 2014)

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.